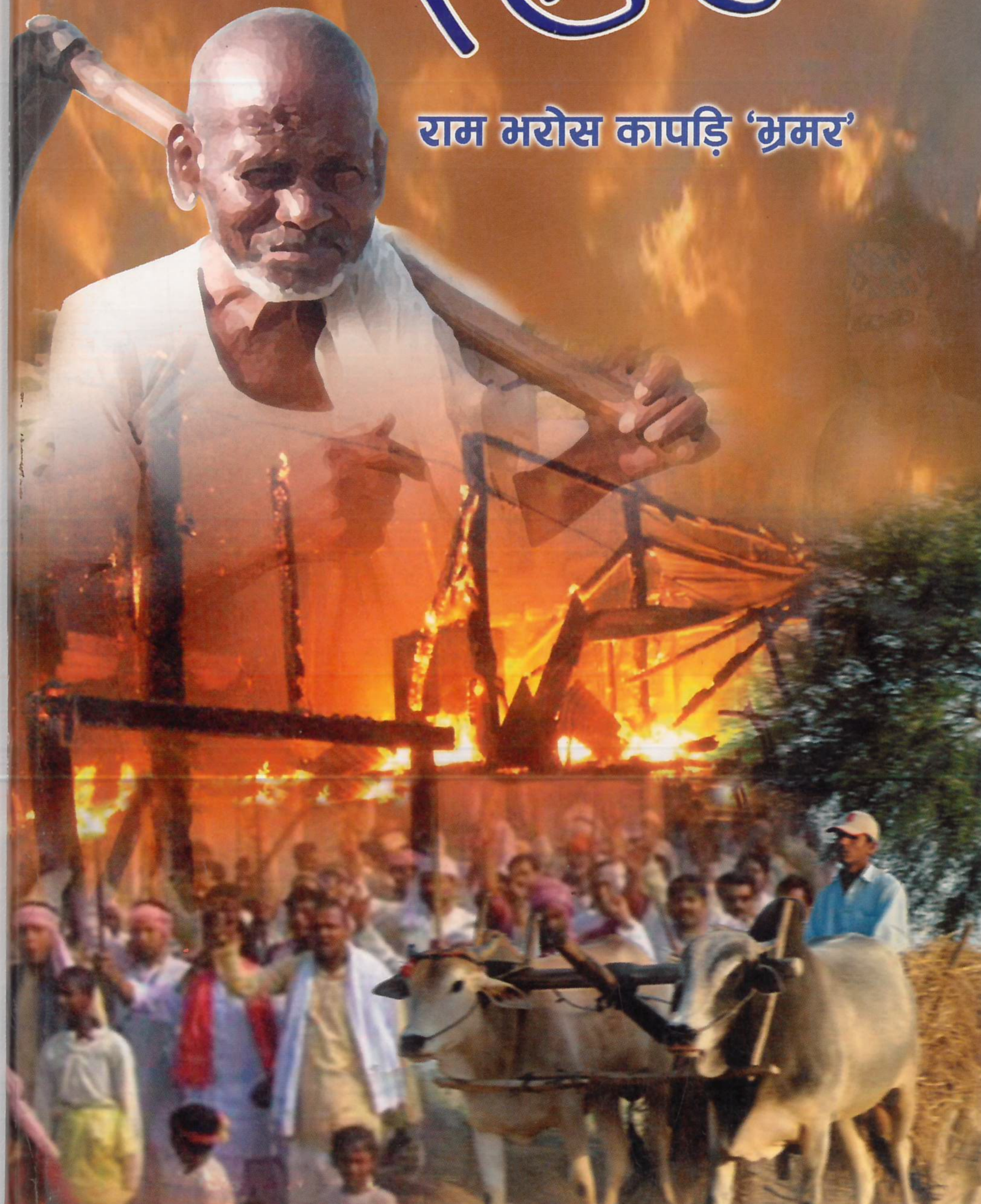
6

घर मुहाँ

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'



घरमुहाँ

(उपन्यास)

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रकाशक



जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान

जनकपुरधाम

कृति	:	घरमुहाँ (उपन्यास)
लेखक	:	रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'
प्रकाशक	:	जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान, जनकपुर
प्रकाशन प्रति	:	१००० प्रति
प्रकाशन वर्ष	:	२०६८।२०१२
सर्वाधिकार ©	:	लेखकमे सुरक्षित
मोल	:	रु. १५०।- व्यक्तिगत रु. २५०।- संस्थागत आरु १००।-
कम्प्युटर	:	राजुप्रसाद काफ्ले
आवरण कला	:	ब रा ही
मुद्रण	:	हिसी अफसेट प्रिन्टर्स प्रा.लि., जमल
ISBN	:	978-9937-2-4664-4

Gharmuhan (Novel)
By Ram Bharos Kapari 'Bhramar'

'घरमुहाँ' - प्रभाव आ प्रतिक्रिया

कार्य-कारण-श्रृंखलामे सुगुम्फित ओहि गद्य कथानककें उपन्यास कहल जाइत अछि, जाहिमे अपेक्षाकृत अधिक विस्तारसँ जीवने-जगतमे अनुभव कएल यथार्थकें कल्पनासँ रङि कए रसात्मक/विचारोत्तेजक रुपमे प्रस्तुत कएल जाइछ। मैथिलीक ख्यातनामा आख्यानकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल उपन्यास 'घरमुहाँ' नेपालक मधेस-आन्दोलनसँ उपजल उमड़ल जनआकांक्षा, मोहभंग, विकृति, पीड़ा, भावनात्मक उद्वेलन, विक्षोभ आ जटिलताकें घोर यथार्थपरक चित्रावली उरेहैत समन्वय दर्शनसंग मर्मस्पर्शी इति पबैत अछि।

आन्दोलन जखन एक गोट ऐतिहासिक उँचाई ल' रहल होइत अछि तँ ओहिमे आन्दोलनकारीक छद्म श्वेत भेष द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठाक नकली खोल ओढ़बामे सफल गुन्डाक सरदार कामेश्वर-सन आपराधिक मनोवृत्तिक व्यक्ति सनक निरन्तर प्रवेश होबए लगैत छैक। हत्या, अपहरण, आतंक आ डर-धमकी द्वारा ई वर्ग खास कए पहाड़ी समुदायसँ पैसाक उगाही करैत अछि। अपन अधिकार, पहिचान आ विकसित मुद्दाक एहि विराट जनक्रान्तिमे शहादत दैत युवकसभक प्रत्येक दिन लहासपर लहास खसि रहल छै आ ओम्हर ई लुटेरा-तत्व पहाड़ीक दोकान सभमे आगि लगा रहल अछि, सामान लूटि रहल अछि, ओकरा सभक घरपर पाथर फेकि-आतंक पसारि रहल अछि। आतंकभरल एहि वातावरणमे पहाड़ी होइतो धोतीकुर्ताधारी मास्टर रमेश उपाध्याय अपना घरमे डरे दबकल रहैत छथि। मोन तँ मास्टरो साहेबक होइ छैन्हि जे - अपन मधेसी मित्र जगमोहन अधिकारी जेकाँ जुलुसमे जा जोर-जोरसँ नारा लगा आन्दोलनकें समर्थन दिऐक, मुदा सोचै छथि -"जे उन्माद एखन युवा सभमे छै ओ की हमर (पहाड़ी) अनुहारकें पचा सकत ?" अदंकसँ भरल मास्टर साहेबकें अपन घर ल' अनबाक विचार जगमोहनकें होइत छैन्हि,

मुदा मास्टर रमेश एहि दुआरेँ अपन मधेश-आन्दोलनक अगुआ मित्र जगमोहनक घर जाएसँ अस्वीकार कए दैत छथि जे कत्तहु आन्दोलन कमजोर ने पड़ि जाइक। १ जून २००७, २५ जुलाई २००७, २८ जुलाई २००७, ५ अगस्त २००७ क वार्ता असफल भेलाक बाद ३० अगस्त २००७क' २२ बूँदापर सहमति होएब मुदा कायान्वयनमे आनाकानीसँ आन्दोलनक फेर उग्र लपट ऊठब - ऐतिहासिक दस्तावेज अछि, जे उपन्यासमे प्रस्तुत भेल अछि।

मास्टर रमेश उपाध्यायक विपत्तिक तमिस्रा तखन अओर सघन भ' जाइत छैन्हि जखन हुनका पता चलैत छैन्हि जे हुनकर बेटी किरण दछिनबरिया टोलक कामेश्वरक बेटा राजीवसँ प्रेम करैत अछि। ताबत ई ककरो ने बूझल छैक जे गामक सम्पन्न आ सम्भ्रान्त मानल जाएबला व्यक्तित्व कामेश्वर गाममे व्याप्त हत्या, अपहरण, चन्दा-आतंक आदिमे संलग्न गिरोहक मुख्य सूत्रधार आ खलनायक अछि। मास्टर महाविपत्तिक समुद्रमे उबडुब कैए रहल छथि कि बेटी किरणक अपहरण भए जाइ छैन्हि आ दश लाख टाका फिरौतीक लेल फोनसँ दिन-राति धमकी आबए लगैत छैन्हि। मास्टर अपन सम्पूर्ण सम्पत्ति बेचिकए विस्थापित होएबाक लेल बाध्य छथि। ओमहर कामेश्वरक एकलौता बेटा राजीव अपन बापक कुकृत्यसँ परिचित भ' जाइत अछि आ मायक माध्यमसँ किरणक मुक्तिक लेल दबाब बनबैत अछि। कामेश्वरकेँ ईं जानि ग्लानि होइत छैक जे ई उएह किरण थिक जकरा पुतहु बना घर अनबाक मोन हुनक परिवार बना चुकल अछि। बसमे चढ़ि चुकल मास्टर रमेश उपाध्यायक ओकर परम मित्र जगमोहन आ अपहरणकारी कामेश्वर गाम घुरा अनबामे सफल होइत छथि।

आख्यानकार 'भ्रमर' अपना समयक प्रामाणिक खिस्सा आबएबला पीढ़ी-दर-पीढ़ीधरि सुनएबामे उत्सुक छथि। तेँ प्रस्तुत उपन्यास मूक इतिहासक मुखर सहोदर भए गेल अछि। राजनैतिक घटनाक्रमक धरातलपर कल्पनाक फट्ठा, मृत्तिका, सन्ढी, स'न आदिसँ समकालीन मधेसक जीवन्त मूर्ति तैयारक' सामाजिक सम्बन्ध-बन्धक रागमयताक रंग ढ़ेउरल गेल अछि जे हृदयहारी अछि। उपन्यास ऐतिहासिक महत्वक दाबेदार एहू कारणें अछि जे ई पहिल नेपालीय मैथिली उपन्यास थिक जे समकालीन राजनैतिक घटनाक्रमपर आधारित अछि।

रमेश उपाध्याय, जगमोहन, कामेश्वर, राजीव, किरण, बन्ठा, लुखिया आदि सभ वर्गीय प्रतिनिधि पात्र अछि। सम्बादमे स्वाभाविकता आ सजीवता छैक। भाषाशैलीक नाटकीयता आ चित्रात्मकताक कारण उपन्यास आदिसँ अन्तभरि सिनेमाक रीलजेकाँ चलैत अछि, जे पाठककेँ आरम्भसँ अन्तधरि बन्हने रहैत अछि। पहाड़ी-मधेसीक एकता संबर्धनक उद्देश्यसँ प्रणित एहि उपन्यासक यात्रा उबड़खाबड़, पहाड़-जंगल, खुरपेड़ियाक जटिल यात्रा नहि, सोझ-सपाट मैदानक सरल-सरस यात्रा थिक जे सरसराकए अपन गन्तव्यधरि पहुँचैत अछि। तेँ उपन्यासक संरचनामे पेँच-पाँच आ ओझराहटि नहि अछि। मधेस-मिथिलाक आम लोकक भाषामे प्रयुक्त 'लल्हका', 'लभका', 'बढ़का', 'खुरसीं' आदि शब्दक सचेत उपयोग उपन्यासक भाषाकेँ सहज स्वाभाविकता आ अभिनवता प्रदान करैत अछि। आख्यानकार श्री 'भ्रमर'क ई सद्यःजात कृति नेपालीय मैथिली उपन्यास साहित्यक एक गोट उपलब्धि थिक, ताहिमे सन्देह नहि।

जनकपुरधाम - १० **- राजेन्द्र विमल**

१६.११.०६८

एहि उपन्यासमे आएल पात्र एवं घटना काल्पनिक अछि । कत्तहु, कोनो तरहक साम्य मात्र संयोग मानल जएबाक चाही । -लेखक

एहि रचनाक प्रसंग....!

हमर लेखन प्रमाणित रुपेँ मिहिरमे छपल बालकथासँ होइत अछि आइसँ अड़तालिस वर्ष पूर्व । नेनेसँ लेखन आ छपएबाक उत्साह । दोसर लेखकक रचना पढ़ैत-पढ़ैत मोन हुलसैत रहए, हमरो कोनो रचना होइतए आ एहिना कोनो पत्रिकामे छपैत । हँ, तहिया पुस्तक छपबाक सोच नहि आएल रहए । एकटा सपना जे हमरा आँखिमे बेर-बेर औनाय तकरे कारणेँ मोनमे ईच्छा शक्तिक विकास भेल, दृढ़ता बढ़ल आ अन्ततः 'मिहिर'मे, जे प्रकाशनक हेतु आइरन गेट' टपब मानल जाइत छल हमर रचना प्रकाशित होब' लागल आ कही तँ दू दशक धरि धुँआधार प्रकाशित होइत रहल । मोनक लौल पुरा भेल । तहिए बुझाएल सपना देखब बेजाए नहि, मात्र सपने देखब बेजाए बात थिक । जँ किछु करबै नहि तँ परिणामक आशा कथीक !

से आइ लगभग साढ़े चारि दशकक लेखन यात्रामे हम लगभग सभ विधामे लिखलहुँ । पत्रकारितामे लागल रहलासँ लेखनमे तकर प्रभाव त पड़ल - संक्षिप्तीकरणक । ताहुसँ बेसी प्रभाव रहए गुरुबर डा. धीरेन्दक लेखनक । छोट-छोटकथा, कविता, निबन्ध किंवा उपन्यास । तहिया त पलखति रहैक लोककेँ । निचैनसँ सय-दूसय पृष्टक पुस्तक पढ़ि सकैत छल । तैयो लघुआकारक रचनाक उद्देश्य की ? हमरा आइयो ई बात बुझबामे नहि अवैत अछि । मुदा हमरो रचनामे सएह संक्षिप्तताक असरि पड़ल प्रायः आ प्रायः हमर लेखन तेहनेसन छोट-छोट परिधिमे अपन कथ्यकेँ फरिछएबाक काज करैत रहल ।

आइ जखन डेढ़ दर्जनसँ उपर मौलिक रचना पुस्तकाकार रुपेँ आबि गेल अछि तखनो हमरा संक्षिप्त लेखनक मर्म बुझबामे नहि आएल । प्रायः तएँ पूर्ण लेखन मानल जाइत उपन्यास, महाकाव्य आ परम्परागत पूर्णाङ्गी नाटक लिखबासँ हम कतराइत रहलहुँ । हमरामे लेखनक धैर्य नहि रहल

कहियो। स्थीरसँ सोची, ओकरा कतौ उतारी आ मास-दूमास लगा लिखबाक काज करी। फेर साफी कऽ पूर्णता दिऐ। ई हम कहियो ने कएल। सम्भवत : तएँ हम आइ धरि अपने मोन मान' बला कोनो रचना लिखि नहि पएबाक पीड़ासँ लड़ि रहल छी। मैथिलीमे समालोचकक कमि छैक आ ताहुमे नेपालक रचनापर लिखबाक ककरा पलखति छैक। नेपालमे त आर अकाले छैक। तखन रचनाक मूल्यांकन भऽ नहि सकल तएँ अपन लेखनकें आनक आँखिए किंवा पाठकक आँखिए तौलबाक अवसर नहि भेटल। हँ, एकबेर मोन प्रशन्न भेल रहए आ साँच वात छै हमरा एखनो ओ रचना प्रिय अछि - 'नहि, आब नहिं। हमर दीर्घकविता। मिथिला मिहिरमे तहिया एकर पांचटा समीक्षा छपल छल। सभ एकसँ एक स्थापित समीक्षक सभक। मोन गदगद भऽ गेल रहए। बड़ कम रचनाकें एतेक चर्च होइत छैक। तखन ओ हमर लेखनक एकटा पड़ाव छल, जकर अपन खास महत्व छलैक। मुदा एहन लेखन जे अपनामे सम्पूर्ण होइ, समाजक कथाकें कहि सकबाक हिम्मत रखने होए - हमरा लेल खोजक विषय बनले रहल।

महाकाव्य आ खण्डकाव्य लिखबाक हमरामे कहियो इच्छा नहि जागल। हँ, उपन्यास लिखल जाए से मोनमे रहए। मुदा एत्तहु उएह धैर्यक कठिनाई बाधा बनि ठाढ़ भऽ जाए। सय-दूसय पृष्टसँ आगांक लेखन जँ नहि भेल त उपन्यास की ? उपन्यास माने मोटसोट आ अनेकों कथा, उपकथासँ भरल। इएह चिंतन आ यथार्थ हमरा एहि विधासँ दूर रखने रहल।

नेपालमे मधेश आन्दोलन शुरु भऽ गेल रहै। एकटा पत्रकारक हैसियतसँ आन्दोलनक कभरेज मात्रे नहि, साहित्यक विद्यार्थीक हैसियतसँ ओकर भीतरक मर्मकें सहेजबाक हेतु सेहो हम आन्दोलन भरि सड़कपर रहलहुँ। आन्दोलन भेल, सफल भेल, चर्च भेलै, सामाजिक रुपान्तरणमे किछु महत्वपूर्ण काज सभ भेलै। मुदा एहि सभमे एकटा कतौ चूक रहि गेलै आ वर्षहुक सदभाव एकाएक घृणा आ बदलामे बदलि गेलै। अढ़ाइ सय वर्षक पीड़ा एकटा बाढ़ि बनि कऽ कतेको घर-परिवारकें बहा कऽ लऽ गेल, जकर बजूद ओही समाजक हेतु उपयोगी रहैक, ओकर उपस्थिति निर्णायक भूमिका खेलने रहैक। वस, इएह बात हमरा मोनमे गड़ल आ ठनलहुँ किए ने एकरे उपन्यासक कथावस्तु बनाओल जाए। उपन्यासकें उपन्यास आ सामाजिक रुपान्तरणक बढ़ैत जोखिमक तथ्य निरुपण।

मोनमे कतेको कथानक धुरियाएल। एकटाकें स्थीर कएलहुँ। कतहु कोनो पन्नामे अंकित कएलहुँ। मुदा फेर उएह दीर्घलेखनक बैसारी, धैर्य आ संयमपूर्वक विकछा कऽ प्रस्तुतिकरणक समस्या। कएक मास कीति गेल, लिखलो पांती कत्त हेरायल पता नहि। लगभग विसरले सन भऽ गेल।

एम्हर फेरसँ मोनमे आएल- एकटा विधा त चाही। चलू उपन्यासे सही। फेर पुरना टिपौटकें खोजबीन भेल। नहि भेटल त मोन पाड़ि पुनः तकरा उतारल। आ जखन लिखबा लेल बैसलहुँ तँ बात उएह भेल। जे सोचलहुँ, से नहि भेल आ बहुत किछु नव अबैत चल गेल। जे लिखाएल ओ अहाँ सभक आगां अछि। हम एकरा उपन्यासे कहि लिखल अछि,, लघु वा दीर्घ नहि। मनमे जे उद्बेग आएल तकरा शब्दमे आकार दैत चल जाएब हमर पूर्वोक प्रक्रिया छल, एखनहुँ भेल। एकर शास्त्रीय निरुपण करबाक जिम्मा सुधी पाठक आ समालोचककें। हँ, हम जे कह चाहैत छलहुँ तकरा अपन आदति अनुसार कहि गेलहुँ अछि। आब विधागत चौकठिमे ओ कतेक सटीक बैसैत अछि, हमर चिंतनक विषय नहि अछि। हमरा जे कहबाक छल एहि आख्यानमे अवश्य लएबाक हम प्रयास कएल अछि। ओना कथ्य छोट वा पैघ नहि होइछ, ओकर प्रस्तुति महत्वपूर्ण होइत अछि।

'घरमुहाँ' नाम मैथिलीमे एहिसँ पूर्वो कतौ आएल होइक से संभव, मुदा हमर एहि उपन्यासक केन्द्रिय पात्रक मनः दशा, अपन जन्मधरतीसँ लगाव आ प्रेम आ विस्थापनक बाबजूद अवसर भेटिते जन्म धरतीपर धुमबाक अद्भूत उत्साह, स्फूर्ति 'घरमुहाँ' शब्दक सार्थकता प्रदान करैत

अछि। तएँ एकरा ताही रुपमे ली से आग्रह।

एहि उपन्यासकेँ प्रकाशन पूर्व अवलोकन कए महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान करबाक हेतु डा. रमानन्द झा 'रमण' प्रति आभारी छी। वन्धुवर डा. राजेन्द्र विमल अस्वस्थताक बाबजूद जाहि चाव आ उत्सुकतासँ एकरा पढ़लनि, अपन उद्‌गार व्यक्त कऽ हमर भावनाकेँ उत्प्रेरित कएलनि, हम कोना बिसरि सकैत छिएनि।

जे से, उपन्यासक रुपमे हमर पहिल कृति 'घरमुहाँ' अपने सभक हाथमे अछि। ई बूझैत जे हमर डेढ़ दर्जन मौलिक कृति मध्य एकर स्थानक निरुपण मैथिली संसारमे जाहि रुपेँ होए, हमर गृहणीक हेतु फेर ई एकटा बोझ बनि कऽ घरमे प्रवेश करत। ने रखबाक ठाम, ने सैंतबाक लेल अलमारीकेँ ठाढ़ करबाक कोनो कोन। तखन प्रत्येक कृति घरमे अबैत काल जेहन बात सुनैछी, एकरो बेरमे सुनब, भले मैथिलीक पाठक एहि व्यथाकेँ नहि बुझथि।

धन्यवाद !

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

होरी महोत्सव : २०६८

घरमुहाँ

(उपन्यास)

भाग - एक

१

मास्टर रमेश उपाध्याय आइओ भरि राति चेहाएले छलाह । कानमे चिड़ैक चहचही पड़लनि तँ भेलनि जे भोर होएबा पर छैक । खिड़कीक पट्टा अलगौलनि । बाहर हुलकी देलनि । देखलनि जे पूब दिशाक आकाशमे ललौन पसरि रहल छैक । ओहो नित्यकर्मसँ निवृत्त भए कोठलीमे आबि गेलाह । हाथमे टूथब्रश लेलनि । पेस्टक ट्यूब तकलनि । हल्लुके आंगुरसँ ओकरा पीचलनि । पेस्ट नहि निकलल । ट्यूबकेँ मोड़ि गोलिऔलनि आ' दबलनि । हवाक संगे किछु पेस्ट आएल । फेर ओकरा मोड़ि ट्यूबक मुह लग आनि औंठासँ दबलनि । मोनमे भेलनि, 'हह आइ कोनहुना काज चलि गेल । काल्हि काज नहि चलत ।' दोसर हाथेँ केवाड़ीक छिटकी खोलि बाहर असोरा पर आबि गेलाह । मास्टर साहेबक दरबाजाक ठीक सामने सड़क छनि । मुदा एखन अबरजात शुरू नहि भेल छलैक । एकदम्म शान्त छल । भेलनि, कतेक काल ई शान्त रहत ! मुदा की करबैक आइ तँ नेपाल बैंक लि. जाएब आवश्यके अछि । नहि तँ सीधाबारीक जोगार कोना हैत ? ओहो तँ पेस्टे जकाँ निंघटिए गेल अछि । हेटौड़ाबालीक नोटिस काल्हिए भेटि गेल छल । ई सोचिते मास्टर साहेब आङन दिस बढ़ि गेल छलाह । आ' पत्नीकेँ शोर करैत कहलथिन - 'ऐ हेटौड़ाबाली, सुनैत छी, आइ कनि सकाले जलखै-तलखै बना देबैक । दश बजेसं पहिने बैंक पहुँचि जएबाक अछि ।'

हेटौड़ाबाली आङन बहारि भाड़ा-वर्तन माजि रहल छलीह । 'अहूँ, केहन अनसोहाँत करैत छी, एखन ठीकसं सूरजो भगवान नहि उगलाह । आ' जलखैक फरमाश कए देलहुँ ? कनेक दम त धरू ।' हुनक स्वरमे रोष छल ।

मास्टर साहेब सेहो कड़कि उठैछै - 'तखन रहब काल्हिसँ भुखले । संगमे चेक अछि आ भजाबके जोगाड़ नै लागि रहल अछि । कहियाधरि दम धरब कहु, ईत एहिना होइत रहतै ।'

'नै, हमर कहब दिन-देखार हुअ दिऔ सं छल । आन्दोलन कतौ अपना वशमे छैक' -पत्नी वर्तन पर नूड़ा घसैत कनेक दुखी स्वरसँ बात फरिछाब' चाहैत अछि । जाड़क मास छलै, हाथ कठुआइत तँ रहबे करैक । तैयो घरक समस्या आ पतिक क्लांत अनुहारक पीड़ा अनुभव कऽ ओ जल्दी भाड़ावर्तन मांजि कलपर अखारब शुरु कऽ दैछ ।

भिनसरकेँ आठक अमल भऽ गेल छै । मास्टर साहेब घड़ी देखैत छथि । भानस घरमे किछु तेल-फोड़नमे छनछनाइत लगैत छनि । पक्के पत्नी आलूक भुजिया बनबैत हएतीह । गहुमक रोटी आ आलूक भुजिया, मास्टर साहेबक प्रिय जलखइ । मास्टर सोहबकेँ भूखो लाग लगलै । ओ अपन कोठरीमे जा धोती-कुर्ता पहिरैत छथि । सेनुरसँ लेभरायल ऐनाकेँ साफ कऽ मुह देखैत छथि । आइ कए दिनसँ दाढी बना नै सकल छथि । अपने बनबैत नै छथि आ सैलूनमे जा बनएबाक वातावरण नै छैक तखन एहि बीच चौबटिया पर बैसल नौआकेँ अपने घरमे बजा दाढी मोंछ बना लेल करैत छलाह । सेहो आइ कए दिनसँ गायब अछि । केओ कहैत छल - ओहो अपन चलता दोकान समेटि कऽ आन्दोलनमे लागि गेल अछि । ओकरा बढ़का फरट्टामे लल्हका झंडा उठौने नारा लगबैत पत्नी सरिता देखने छलखिन्ह ।

मोनतँ मास्टरो साहेबकेँ होइत छलै, जुलूशमे सामेल भऽ मीते जकाँ जोर-जोरसँ नारा लगा अपन सहभागिता देखबितै । मुदा जे उन्माद एखन युवा सभमे छै ओ की हमर अनुहार केँ पचा सकत ? - ओ बेर-बेर सोचै छथि । यद्यपि अपन कएक पुश्ताक बसाई छैक ओकर एहि धरतीपर । बाबा, दादा, एत्तहि जनमलाह, एत्तहि स्वर्गीय भेलाह । एहि समाजमे एना

कऽमिललाह जे अपनाकेँ कहियो अलग नहि बुझलनि । खेती, पथारी, घर-आंगन, विवाह-शादी, मुडंन, उपनयन, नीक-बेजाय सभमे लागल रहलाह । आइ कोना हम सभ आन भऽ गेलिऐ' । एहि दुआरे जे हमरा सभक अनुहार पहाडीक अछि । हम सभ घरमे नेपाली बजैत छी ? पता नहि मास्टर साहेब आर कतेक देरी धरि खुरसी पर बैसल सोचैत रहतथि, जँ विचेमे पत्नी टोकि नहि दितनि -'सुनैछी, नाश्ता भऽ गेल । हाथ धोकऽ बैसू !'

मास्टर साहेब धड़फड़ा कऽ उठैत छथि आ आंगनमे कलपर जा हाथ-पएर धोकऽ ओसारापर पलथीमारि बैसि रहैत छथि । पत्नी थारीमे आलूक भुजिया आ धीपले रोटी लऽकऽआगाँमे राखि दैत छथिन्ह । मास्टर साहेब खाएब शुरु कऽ दैत छथि । ताबत पत्नी चापा कलमेसँ लोटामे पानि आनि थारीक बाम कात राखि दैत छथिन्ह आ लगेक पीढिकेँ अपना दिश घुसका बैसि रहैत छथि । मास्टर साहेबकेँ हबर-हबर रोटी तोड़ैत देखैत रहैत छथि । ओकरा बुझल छैक आइ नेपाल बैंक लि.मे जाही पड़तै नहि त अनर्थ भऽ जएतै । घर परिवार चलाएब मुश्किल भऽ जएतै ।

मास्टर साहेब जलखै समाप्त कऽ लोटाक पानि पीबि हाथ धोएबालेल कलपर जाइत छथि । हाथ धोकऽ गमछासँ पोछि घरमे पैसि हाफ स्वीटर पहिरैत छथि आ कनेक मैलगर पुरना कोटकेँ सेहो देहमे सन्हिया लैत छथि । माघक भोर त ओहिना कपकंपबैत छै । घड़ी पर नजरि दैत छथि - 'पौने दश भऽ गेलै । आब चलना चाही ...।' देहरीकेँ टपबाले' एक डेग आगाँ की बढ़ौलनि नारा-जुलुशक आवाज कानमे पड़लनि -'मधेश आन्दोलन- जिन्दावाद !मधेश सरकार- जिन्दावाद, पहाड़ी शासक - मुर्दाबाद !' । आ एकटा ढेपा घरक छतपर तराकसँ खसलै । मास्टर साहेब चोट्टे अपन उठल डेगकेँ पाछा कएलनि आ केवार बन्न कऽ घरमे जा धम्मसँ बिछाओन पर खसलाह । हुनका लागल छलनि एतेक दिन भऽ गेल छैक किछु बात त भेल हेतै, वातचीत भइए रहल छै, आइ भोरेसं शांतो छलै टोल, महल्ला । काज त आइ भइए जाएत । मुदा, ई की ? आब की करबै ?

पत्नी हहाएल-फुहाएल लगमे अएलखिन्ह-'की भेल ? किछु छतपर धम्मसँ खसलैए । केओ ईट-पाथर त ने फेकलक ?' मास्टर साहेबकेँ लगैछै जँ बातकेँ भरिआकऽ बाजत त पत्नीसहित धीआपूता डेरा जएतै । एक त ओहिना एहि आन्दोलनमे पहाडी समुदायक लोक दहशतिमे अछि । तएँ किंतु नरम भऽ बजैत छथि - 'नहि, तेहन नै कोनो बात । जुलूशकेँ देखलिऐअ तएँ विलमि गेलहुं । शांत भऽ जाएत त जाएब !

'नहि, जएबाक कोनो काज नै छैक । समय खराब भऽ गेल छैक । भानुचौकपर भानुकेँ मूर्ति तोड़ि देलकै, कएटा दोकानमे आगि लगा देलकै । किछु गोटेकें घरके सीसा पाथरसं फोरि देलकैअ । दिन-दिन बात बिगड़ि रहल छै । नै जाउ, किछु कऽ देत त, कत्त की करबै हम सभ !' - पत्नी अनघोल कर लगलीह । जेना आदंक पसरि गेल हो सौंसे देहमे ।

'अहां व्यर्थे चिन्तित होइछी । हमरा केओ किछु ने कहत । भरल शहरमे त हमर विद्यार्थी अछि । ककरो हम विगाड़ने नै छिऐ त के की करत !' -मास्टर साहेब तोष भरोस दैत छथिन्ह ।

बाहर सड़कपर लोकक आवागमन बढ़ले जा रहल छैक । जोर-जोरसँ नारा लगाओल जा रहलैक अछि । सरकार प्रमुखकेँ अन्ट-सन्ट गारि पढ़ल जा रहल छैक, पुतला दहन हएतै से आन्दोलनी सभ हल्ला कऽ रहल छलैक । नारासँ लगैछै विभिन्न पेशाकर्मी सभ सेहो आन्दोलनमे उतरि गेल अछि । शिक्षको सभ हएबे करतै । मास्टर साहेबकेँ मन कछमछा जाइछै -'हमरा चलए त हम मीतक संग नारा लगाबी, झंडा उठाबी...मधेशी एकता- जिन्दाबाद । मुदा...। पता नहि, लोकके की भऽ गेल छै । किए ई अनुहार देख नहि चाहैए ...!' मास्टर साहेब सड़कपर चलैत समूहक बोलीसँ आकर्षित भऽ एकबेर अपन खिड़कीक दोग दऽ बाहर देख चाहैत छथि । खिड़कीक पटके कनेके अलगा देखैत अछि तँ जी सन्न रहि जाइत छनि । मीत बढ़का लाठी लेने, मुरेठा बन्हने आगाँ-आगाँ नारा लगबैत आ पाछाँ एक लहासकेँ फरकीपर चारि युवक उठौने बढ़ल जा रहल अछि । नारा लागि रहल छैक - 'बुचनु ठाकुर- अमर रहे । शहीद ठाकुर -जिन्दावाद । गृहमंत्री- राजिनामा दे । प्रधानमंत्री- राजिनामा दे ।'

लोक जेना सनकि गेल अछि । फरठ्ठासँ देखरगर घरक देवालपर, भीठपर फटाक-फटाक मारैत आगाँ बढ़ि रहल अछि ।

मास्टर साहेब डरे सर्द भऽ जाइत छथि । स्थिति बिगड़ि गेल छलै । गोली-गट्ठा चला कऽ ई सरकार त मधेशी जनताकेँ आओर उत्तेजित कऽ रहलैक अछि । दिनकेँ एक बाजि गेल हयतै । बाहर निकलब संभव नहि । मास्टर साहेब गओसँ खिड़की बन्द करैत छथि आ पुनः ओछानपर पड़ि रहैत छथि ।

● ●

२

साँझ पड़िते सौसे शहर आइ काल्हि जेना भयावह भऽ जाइत छैक । धूम-धड़ाका कतौ ने कतौसँ उठिते रहैत छैक । दिनमे सडक पर फेंकलगेल अश्रुगैसक दुर्गन्ध जेना घर घरमे पैसि रहल हो । लोक साँझे दरबज्जा लगा घरमे बैस रहैत अछि । बरु खौंझा रहल छैक आब लोक । एतेक दिन भऽ गेलै, दर्जनों लोक प्राणक आहूति देलक आ सरकारकेँ, आठो दलकेँ किछु नहि बुझाइत छैक ।

मास्टर साहेब सेहो खौंझाएल सबेरे दरबज्जा बन्द कऽपत्नीसँ कहैत छथि - 'हे, जल्दी भानस-भात कऽलू । आ सबेरे सकाल सुतबार्क व्यवस्था करु । ई हुड़दंग एखन आरो चलत ।'

पत्नी भानस घरमे पैसि जाइत छथि । मास्टर साहेबकेँ दोसरो बातक चिन्ता छनि । काल्हिसँ घर कोना चलतै । पाइ नहि तं अन्न नहि आ अन्न नहि तँ पेटमे दाना नहि । दूटा गेल्हबा-गेल्हबी छैक । जुआन बेटी छैक । कोना की हयतै ।

विजुली गुम्म भऽ गेल छै से आओर डेराओन लगैत छैक । मास्टर साहेब अपन कोठरीमे खुरर्सीपर बैसल डायरी उनटबैत छथि -'आइ त चौबिस गते भऽ गेलै । तीन माससँ सौसे मधेश जड़ि रहल अछि, मुदा हाय रे नेता सभ...।' ताबत फोनकेँ घंटी टनटनेलनि । मास्टर साहेब तँ पहिने सकपकएलाह, फेर हिम्मत कऽ फोन उठबैत छथि - 'हेलो, के छी ?'

'मीत हम छी जगमोहन । की हालचाल छै ?'

मास्टर साहेबकेँ जानमे जान अएलनि -'जी, हम ठीके छी ।'

'नहि, अहां ठीक नहि छी । हमरा पता चलल अछि अहाँक घरपर पत्थरबाजी भेल अछि ।'

'जी नहि, के कहलक अछि। हम दिनभरि घरेमे छी। कहां किछु भेलैए।'

'मीत, हमरोसं झूठ बजैत छी। हमरो सभके आदमी छैने। हम रहितिऐ त सारके गरदनि मरोड़ि दितिऐ। हम सभ त आगा रही... ।'

मास्टर साहेबक आँखि डबडबा गेलनि। अन्हारमे के देखैत, तैयो ओ गमछासँ आँखि पोछि लैत छथि। मुदा किछु बाजि नहि पबैत अछि।

'मीत, हमरा त ईहो बुझमे आबि गेल अछि, अहां कए दिनसं बाहर निकलि नहि पौलहुं अछि। घर दुआर केना चलतै, बाल वच्चा के की भऽ रहल छै?'

मास्टर साहेबकेँ एखनो बकार नहि फुटैत छनि।

'अहां एखने हमरा ओत्त चलि आउ सपरिवार। हम रमुआके पठबैत छी। ओत्त खतरा अछि।' आब मास्टरकेँ नहि रहल भेलनि। कहलक -'मीत, जखन अहांके लगैए हमरापर खतरा अछि त ई खतरा अहां लग जाएत त ओहु ठाम खतरा आबि सकैछ ने।'

'अहांके नहि बुझल अछि, एहि आन्दोलनके मुख्य व्यक्तिमे हमहूँ छी से। के की कऽ लेत।'

'मीत, अहां ठीके बड़ भावुक आ स्वच्छ विचारक लोक छी। ई आन्दोलन अहीं सनक समर्पित लोकसं बढ़ि रहल छैक। एकटा पहाडीके अहां अपन घरमे रखबै त ई हल्ला बाहर जएतै। आन्दोलनमे लागल लोक अहांपर शंका-उंपशंका करत। अहांके चोट लागत, आन्दोलन कमजोर होइत जएतै। ई किन्नहु नहि भऽ सकैछ। हम एत्तहि ठीक छी।'

मास्टर साहेबक विश्लेषणसँ जगमोहनपर कोनो प्रभाव नहि पड़ैछ। ओ अपने आबकेँ लेल तैयार भऽ जाइछ। मास्टर साहेबकेँ कहैत अछि - 'हम किछु नहि बुझैत छी। अहां सभके तैयार राखू, हम अपने अबैछी।'

'मीत, ई आन्दोलन अहींक नहि, हमरो अछि। हम अपना आंखिसं एहि ठाम होइत शोषण, उपेक्षा देखने छिऐ। एहि संघर्षमे नुकाएल जे भाव छैक तकर प्रतिफल हमरो सभके भेटत ने। मुदा एखन जे स्थिति छैक ताहिमे शांते भऽ रहब ठीक छैक। हम सभ व्यवस्था कऽ लेबै, अहां निश्चिन्त रहु।'

मास्टर साहेबक बातसँ एखनो जगमोहन सहमत नहि अछि। ओ आक्रोश व्यक्त करैत कहैत अछि - 'मीत, आइ अहां अनठिआ, पहड़िया, शोषक कोना भऽ गेलिऐ? दृष्टिकोणमे ई वदलाव किएक? जहिया हमर बेटी इजोतिया स्कूल नै जाए चाहे, तहिया कान्ह पर लऽ जा, विस्कुट, लेमनचूस, चकलेट खुवा-खुवा अहां पढ़ौलिऐ, इजोतियाक विआहमे घरदेखी अहां कैलिऐ, छेकामे भारक आगां वाप बनि अहां गेलिऐ, विआहमे रुसल जमायके बिना ककरोसँ पुछने अपन हाथक औंठी पहिरा भात अहां खुऔने रहिऐ, विदाइ बेरमे वापोसं बेसी भोकासी पाड़ि कऽ कानल अहां रही-तखन अहां आन नहि रहिऐ। आइ लोकक नजरिमे दोसर, वांतर भऽ गेलिऐ?'

मास्टर साहेब पछिलका बातकें स्मरण करैत जगमोहनकेँ समझबैत छथि - 'मीत, ओ समय दोसर रहै। अइ आन्दोलनके लोक अपना अनुकूल सेहो देख लागल अछि। राता-राति लोकके नजरि बदलि गेलैए। सभ अहीं जकां नहि ने छैक। अहांके एहि आन्दोलनमे नीक सम्मान अछि। हम नै चाहै छी हमरा खातिर अहां कमजोर पड़ी।'

'हम कोना मानि ली जे हमर मीत दुखमे रहए आ हम एत्त फैलस रही। हम छोड़ि देब वरु आन्दोलन। हम फेर पुरने दिन जकां दलान पर बैसिकऽ गायल करब - 'अपना किशोरी जीके चरण दबएबै हे, हम मिथिलेमे रहेबै... ।'

मास्टर साहेबकेँ लगैत छनि मीत फेर भावुकतामे बहल जा रहल छथि। आ ओ हुनको बहकाब चाहैत छथि जाहिसँ हम बात मानि जइअनि। नै त कतौ ठीके दुरापर ने आबि जाथि। मनविचलित भऽ जाइत छनि। पत्नीकेँ सोर पाड़ैत छथिन - 'सरिता, कत्त छी?'

पत्नी भनसा घरसँ सोझे मास्टर साहेब लग झटकारैत अबैत छथि। समयकेँ देखने सबकेँ मन डहकल रहैत छैक। अबिते पुछैत छथिन - 'की भेल?'

'नहि, किछु नै । मीत जिद कऽ रहल छथि जे हुनका ओइ ठाम अपना सभ चली ।'

'नहि, केना हएतै । की कहत लोक । ताहूमे एखन । हुनको बदनामी हयतनि । कहि दियौन, हम सब ठीक छी । दूचारि दिनमे सभ ठीक भऽजएतै ।'

पत्नीक वातसँ मास्टर साहेबकेँ साहस बढ़लनि । फोन पर दृढ़तापूर्वक कहैत छथि -'मीत, कोनो चिन्ताक वात नै । सभकेओ ठीक छै । जहां तक गीतक बात छै, मधेश आन्दोलन सफल होब दिऔ, दुनू मीत मीलिकऽ फेरसँ गीत टेरब । एखन रह दीअ...'

मास्टर साहेबक बात जगमोहनकेँ नीक नहि लगलनि । भेलनि लगैछै मीत टारि रहल छथि । फेर कहैत छथिन - 'हम ठीके आन्दोलन छोड़ैत छी आ अहांके लेब अबैत छी ।'

मास्टर साहेब सेहो भावुक भऽ गेलाह -'मीत, हमरे सप्पत अछि जे अहां आन्दोलन छोड़ब । ओहिमे हमर सम्पूर्ण परिवारक भविष्य अछि । ने अहां हमरा लेब आएब ने छोड़बाक बात करब, बस !' आ फोन राखि दैत छथि ।

आइ पहिलबेर मास्टर साहेब अपन मीतकेँ एहन कठोर बचन कहने छलथिन । आगाँमे हतप्रभ भऽ ठाढ़ पत्नी मास्टर साहेबक आंखिमे फेरसँ डबडबा आएल नोर तँ नहि देखि सकल छलीह, मुदा आँखि फेरिकऽ दोसर कोठरीमे चल जाइत टुकुर-टुकुर देखैत रहि गेलीह ।

● ●

३

जुलूशमे सभ तरहक लोक सामेल अछि । बहुतो तँ नगरक जानल मानल लोक सभ अछि जे मधेश आन्दोलनमे एक्यबद्धताक हेतु सड़क पर अछि । ओ संयमित अछि । संघर्ष समितिक बैनर संगे शालीनतासं नारा लगबैत आगाँ बढ़ि रहल अछि । किछु उक्कठी छौडा़ सभ अछि, जत्त कतौ प्रहरीकेँ देखैत अछि जोर-जोरसँ चिचिआए लगैत अछि - 'प्रहरी प्रशासन, मुर्दावाद ! गृहमंत्री- राजिनामा दे...।' माहौल एहन जे केओ ककरो रोकियो ने सकैत अछि । किछु युवा ईंटक टुकड़ी, छोट-छोट पाथर हाथमे लऽ ठीका कऽ प्रहरीक कपारपर निशाना सधैत अछि । दंगा प्रहरीसभ हाथक अवरोधसँ तकरा रोकैत लाठी बजारैत दौगैत छैक । सभ लत्ते-पत्ते भगैत अछि । ई खेल लगभग प्रत्येक चौकपर खेलल जा रहल अछि ।

जुलूशमे नगरक दक्षिनबारी टोलक कहबैका कामेश्वर सिंहक बेटा सेहो रहैत अछि । कहांदन कामेश्वर सिंह जुलूशक तैयारी आ माटियातेल, पेट्रोल किनबाक लेल पाइयो खूब खर्च कऽ रहल अछि । ई तँ एखन लोककेँ बूझल नहि छैक - एहि उदारताक कारण की छैक । साँचे ओ मधेश आन्दोलनमे लागि गेल अछि अथवा आन्दोलनकेँ हिंसक बनएबाक लेल चालि चलि रहल अछि । समाजमे सिंहक गतिविधि पर एखनो लोककेँ बहुत बेसी विश्वास नहि छैक । तएँ कतेको शंका उठैत-मेटाइत रहैत छैक । मुदा ओकर प्रभाव एहन छै जे केओ किछु बाजि नहि पबैत अछि । ककरो कल्ला नै अलगैत छैक ।

ओ की कर' चाहैत अछि से तँ पता नहि, मुदा ओकर बेटा राजीव सिंह एखन मधेश आन्दोलनक नामपर जी-जान लगौने अछि । कोनो एहन दिनक जुलूश नहि हएतै, जाहिमे ओ आगाँ नहि रहल हो । संगी सभ कए

दिन रोकबो कएलकै -'भाइ, आन्दोलनके बात छै। गोलियो-गठा चलैत रहैत छैक। वापक एकटा बेटा छीही, किछु भेलौ त ... ।'

राजीब बातकेँ टारैत हँसि दैत छलै - 'भाइ हम सभ एहन बात सोचिकऽ ओइ महान मधेशी शहीदप्रति अन्याय कऽ रहल छिऐ। की ओहिमे केओ नहि रहै जे अपन वाप-मायक एसगरि बेटा छल। अपन भूमिक नामपर, अपन अस्मिताक नामपर, अढ़ाई सय बर्षक शोषणक विरुद्ध आवाज बुलंद करबाक नामपर जीवन उत्सर्गकऽ देलकै। खबरदार जे एहन बात फेर बजिहे। तोरा सभके डर होइत छौ, धूरि जो। मधेशक लुप्त भेल प्रतिष्ठा जा धरि आब नै धुरतै हम एहिना सडक पर रहबै...।'

संगी सभ चुप्प भऽगेल। राजीबक संग ओहो सभ जोर-जोरसं नारा लगब लगलैक। गाम-गामसँ लोक जुलूशमे नारा आ बैनर संगे फेटाइत गेल, जन समुद्र बनैत गेलै।

जुलूशक सहभागी कोनो व्यक्तिक हाथमे राखल मिडियम बैण्ड रेडियोसँ समाचार आबि रहल छलैक -'आन्दोलनक चौदह दिनमे अठारह गोटे शहीद भऽ गेल अछि, पचासो गोटेक अंगभंग भऽगेलैए आ एक हजारसं उपर घायल अछि। सभक उपचारकेँ हेतु कोष खडा कएल गेल छैक, जाहिमे धमाधम चन्दा प्राप्त भऽ रहल छैक ...।'

राजीब पलटि कऽ अपन संगी दिश तकैत अछि। संगी मुस्किया दैछ आ राजीबकेँ उत्साह बढ़बैत कहैत अछि -'हमर उदेश्य तोरा पाछा लऽ जएबाक नहि छल। दिन-दुनियांक बात मात्र कहने रहियौ। आ तों कोना बूझि लेलही, तोरा छोड़ि हम सभ आन्दोलनसं पाछा भऽ जाएब...।'

ताबतमे पाछाँ किछु हल्ला भेलैक। चौकपर एकटा दोकानक ताला तोड़ि देल गेल छलै आ ओइ महक सामान सभ हाथे-हाथे बोरा-बोरीमे भरने किछु लोक भागि रहल छल। पता लगलै ओ एकटा नेपाली भाषी पहाडीक दोकान छलै। जुलूश नमहर रहै आ अगिला लोक बहुत आगाँ चलि गेल छल। अपरान्ह भऽ रहल छलैक। एहनमे किछु गोटे गओं सुतारि लेने रहय।

'भाइ आब बुझलिऐ। किछु अनचिन्हार छौडा़ सभ कांखतर बोरा आ ओहिमे नुकाकऽ हथौड़ी सभ कैला रखने छल। हमरा त लागल छल मधेश आन्दोलनक उत्साहमे काम करिते-करिते जुलूशमे आबि गेल अछि। नहि, ई त लुटेरा सभ लगैए'-राजीवक संगी विनोद बातकेँ गमैत राजीवसँ कहैत छैक। राजीव गंभीर भऽ जाइछ -'मधेश आन्दोलनके एहने तत्वसं खतरा छैक। नेता लोकनि जाहि उद्देश्यसं आइ दशकोंसं मधेश मुदाके उठौने छलाह आ माघ २ गते काठमाण्डूक मण्डलापर अन्तरिम संविधानके किछु दफा जरएबाक साहस कएने रहथि तकर उद्देश्य एना कोनो वासिन्दाक प्रति दुर्व्यवहार आ लुटपाट नहि रहैक। लड़ाई त शासक सने रहै, एतुक्का वासी सभसं नहि ने। तखन एहने काज एहि आन्दोलनके बदनाम करतै।'

'से कोनो कसरि छोड़ने छैक। फलांक घुसपैठ त चिल्लाके सहयोग कहबे करैत छैक आठदलके नेता सभ'- विनोद कहैत छैक।

भीड़ महक एकटा युवक अपन संगीकेँ कहैत विनोद सुनैत अछि आ राजीवकेँ सेहो ओम्हर ध्यान दिअ कहैत छैक। युवक अपन साथी सभसँ कहैत अछि -हे, देख अएलौ मस्टरबाके घर। सार, नेपालीमे हमरा सब साल फैल कऽ दैअ। एहे मौका हौ भाइ, चुकाले'-आ हाथमहक पाथर जोरसँ छतपर फेकैत अछि। दोसर संगी सेहो पाथर फेकैत छैक जे खिड़कीमे धड़ामसँ लगैत छैक। राजीवक मोन घोर भऽ जाइत छैक। ओ बड़बड़ाइत आगाँ बढ़ि जाइत अछि -'पता नहि ई सभ मधेश आन्दोलनके आगां बढ़ देतै कि नहि।'

● ●

४

१ जून २००७। आइ नगरमे चहल-पहल खूबे बढ़ल अछि। विगत पांच-छओ माससँ जाहि आन्दोलनक कारणें जनजीवन अस्तव्यस्त छलैक आइ तकर पूर्णरुपेंण पटाक्षेप होब जा रहलैक अछि। सरकारक वरिष्ठमंत्रीक संयोजकत्वमे वार्ता टोली बनल छैक ओ आइ मधेश आन्दोलनक वार्ता टोलीसँ सहमति करत आ तत्कालकें लेल आन्दोलन स्थगित कऽ देल जएतैक।

विगत आठमाससँ बन्द, हड़ताल कैकबेर भेलै, कैकबेर बन्द भेलैक। मुदा जुलूश, नारा निरन्तर जारी रहल। पुलिससँ मुठभेड़ो होइते रहलैक। मधेशी सपूत शहीद होइत रहल। मुदा अन्ततः सरकार आ संसार मधेश आ मधेशीकें चिन्हलक। ओकर समस्या समाधान करबाक लेल दबाव बढल आ आइ वार्ता होब' जा रहलैक अछि।

मधेशी वार्ता टोली यात्री निवासमे आबि गेल अछि। मधेशक मसीहा बनल संयोजक, कार्यकर्ता एवं विद्वत जनसँ आबभगत पाबि रहल छथि। सभक मनमे जिज्ञाशा छैक - समझौता केहन आ कोन मुद्दापर हयत। मधेशक भाव ओहिमे रहतैक कि नहि। बढ़का दबाव छै वार्ता टोलीपर। सरकारी वार्तांटोलीक संयोजक आइ औताह आन सभ आएल छथि।

यात्री निवासमे तैयारी चलि रहल छैक। संयोजक महोदय अबिते स्थानीय एकगोटे वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकारके रातिए बजा पठौने छलखिन। ओ भोरे अबैत छथि। मधेश आन्दोलनमे पूर्णरुपें लागल -भिजल रहलासँ बहुतो अनुभव संयोगने छथि। यात्री निवासमे पहुचिते कार्यकर्ता हुनका गोप्य कोठामे लऽ जाइत छनि। कोठरीमे संयोजक आ एक गोटे वार्ताटोली सदस्य रहैत छथि। हुलसि कऽ हुनक स्वागत करैत

ओछाओनपर बैसबाक आग्रह कएल जाइत छनि। संयोजकजी अपन करिया बेगसँ किछु पन्ना बहार करैत छथि, जाहिमे टाइपकएल गेल २५ बुंदाक सहमतिपत्र होइछ। एहिसँ लगैत छैक - मोटामोटी रुपमे दुनू पक्षक वीच वात तय भऽ गेल छैक, मात्र औपचारिकता पूरा कएल जा रहलैक अछि। तथापि संयोजकजी कागज आगाँ बढ़बैत साहित्यकार महोदयकें आग्रह करैत छथिन - 'ई कागज देखि लियौ। सहमतिक बुंदा सभ छै जे हमरा सभक मांग अछि। एहिमे शब्द, भाषा आ जं जरुरी बुझाए त कोनो छुटल मांग होइ त सेहो सुधारि कऽ तैयार कऽ दिऔ।'

साहित्यकार महोदयकें गौरब बोध होइत छनि। आखिर तिऔलनि तँ संयोजक महोदय। ओ सभमांगकें गंभीरतासँ पढ़ैत छथि आ लाल कलमसँ शब्द, भाषाकें सुधार करैत एक आधमांगकें पूरा करैत छथि। तखन एकटा नव मांग जे हुनक अपनो पेशासँ सम्बन्धित बुझाइत छनि थपल जा सकैछ, संयोजककें कहैत छथिन। ओ सहर्ष स्वीकृति प्रदान करैत छथि आ तखन मांग पचीस सँ छब्बीस भऽ जाइत अछि। ओ मांगपत्रक कागज संयोजककें जिम्मा लगा दैत छथि। संयोजक ओकरा टाइप करवालेल विश्वस्त कार्यकर्ताकें दैत छथिन्ह। साहित्यकार विदालैत वार्ताक शुभकामना दैत छथिन। संयोजक फोनसँ ककरो निर्देश देब लगैत छथि।

* * *

दिनभरि नगरमे वार्ता आ सहमतिएक चर्चा छैक। जनजीवन सामान्य भऽ गेल छैक। सभक अनुहारपर एकटा विजयक उल्लास छैक। सद्भाव कही कि विजय जुलूश निकालबाक तैयारी सेहो युवा सभक वीच चलि रहल छैक।

मास्टर रमेश उपाध्याय जेना कैक मासपर भरिपोख भोजन कएने होथि। गमछासँ हाथ-मुह पोछैत बैठक कोठामे अबैत छथि आ पत्नीकें सोर पाड़ैत छथिन। पत्नी थाड़ीकें कलपर राखि अबैत छथिन। 'की, वात छै ?' पत्नी पुछैत छथिन।

'नै, कहलोंह कनेक लभका कुर्ता लाउ। बाजार घूमि अबैछी। लगैए, आब सभ संकट टरल। लोक चैनसं रहत'-मास्टर साहेबकें अनुहारपर सन्तोष आ सुरक्षाक मुस्कि छनि।

एहिविच मास्टरसाहेब बाजार नै जाइत छथि से नहि। बाजारो जाइत छथि, इस्कूलो जाइत छथि। संगी-साथीसँ भेटोघाँट होइत छनि। मुदा जे उन्मूक्तता पहिने महशूस होइत छलनि से एखन नै बुझाइत छनि। लोकसँ नजरि चोराकऽ निकल' चाहैत छथि। पहाड़ी समुदायकें प्रति जाहि तरहक विभेदक वीआ छिड़िआ गेलैए, तकरा समेट' मे समय लागि सकैछै। विनु किछु कएनहि ओ अपराधी जकाँ रहबा पर विवश छथि।

मुदा आइ ओ उन्मुक्त भऽ बाजारमे घुम' चाहैत छथि। मित्र सभक संग गपसप कर' चाहैत छथि। वार्ताक पश्चात उठ'बला मधेशक खुशीमे स्वयंकें सामेल कर' चाहैत छथि।

घरवाली कुर्ता आनिदैत छनि। ओ तकरा पहिरि जेबीसँ सोपारीक एकटा टुक बहार कऽ मुहमे धरैत छथि। गमछाकें ठीकसँ दुनू कान्हपर धऽ निचाँ मिलबैत छथि। धोती तँ पहिनहीसँ पहिरने रहैत छथि। ओ आंगनसँ बहार भऽ जाइत छथि।

• •

५

नगरक सरकारी गेस्टहाउसमे पत्रकार सभक भीड़ छैक। बाहरकें सामान्य व्यक्तिकें भीतर जएबाक मनाही छैक। सरकारी वार्ताटोली, आन्दोलनरत पक्षक वार्ताटोली मात्र भितर कोठरीमे बैसल अछि। पत्रकार सभकें बहरिया बरण्डा आ नीचाँक अंगनइमे रहबाक सुविधा देल गेल छैक। ताहूमे प्रहरी सभ निगरानी कऽरहल छैक, एम्हर नहि त ओम्हर नहि। सुरक्षा व्यबस्था अत्यन्त कड़ा अछि।

जहिना-जहिना समय बीति रहल छैक पत्रकार सभक उत्सुकता बढ़ि रहल अछि। विगत छओ माससँ चलैत मधेश आन्दोलनसँ लोक अस्तव्यस्त अछि। जन-जीवनमे असहजता आबि गेल छै। तएँ अझुका वार्तापर सौंसे मधेशक नजरि छैक।

पत्रकारोसभ एहि समाचारकें अपन-अपन समाचार माध्यममे पहुँचएबाक लेल उताहुल भेल अछि। ककर पहिने पहुँचैत अछि। कोनो नव समाचारक गन्ध भेटौक कि टी.भी.क पर्दामे नीचाँक ब्रेकिंग न्यूजमे ताजा समाचारक पंक्तिमे लिखा सकैक।

वार्ताक सफलता आ असफलता लऽ कऽ पत्रकारो सभमे खुब घोंघाउज भऽ रहल छैक। पक्ष-विपक्षमे तर्क देल जा रहल छैक। सभ अपन-अपन तर्कसँ दोसरकें प्रभावित करबाक काज कए रहल अछि। तखने वार्तामे बैसल एकगोटे मधेशी नेता बहराइत छथि।सभ पत्रकार ओम्हरे दौड़ैत अछि। लगैछै किछु भेलैए जरुर। मुदा ओ कोनो विशेष काजसँ सुरक्षासाथ बाहर जा रहल होइत अछि। पत्रकार सभ निराश भऽ फेर वहसमे लागि जाइत अछि।

भीतर वार्ताक संग संग चाह-पान आ जलखइयो चलिते हएतैक। मुदा बहरामे प्रतिक्षारत पत्रकार सभकें तँ भूखे हाल बेहाल भेल जा रहल

छैक । मुदा से आओर बेसी काल प्रतीक्षा नहि कर' पड़लै । मधेशी वार्ता टोलीक संयोजक महोदय बहरएलाह । घेरलक पत्रकार लोकनि । ओना हुनक अनुहारपर छिड़िआएल उदासीसँ कोनो नीक सूचनाक आशा नहिएसन हएत से पत्रकार सभ अनुमान लगा लेने छल । तथापि पुछैत अछि -'की भेल वार्ता ?'

'बुढ़ियाक फूसि ! हमसभ जे मांग देने छलिऐ, ताहिमे आधा-छीदा मांगपर मात्र सहमति देखा रहल अछि सरकार । मुख्य मांग छुटले रहि गेल अछि । तएँ वार्ता भंग भऽ गेल अछि । हमरा सभक आन्दोलन और कडाईसं जारीए रहत ।' -नेता जी मुट्ठी बान्हि उद्घोष करैत छथि । हुनक उद्घोष मधेशक हेतु सशक्त आह्वान भऽ रहलैए एखन । तएँ पत्रकार सभक हेतु ई समाचारो कोनो कम महत्वक नहि छैक । सभ अपन-अपन संचार सामग्री समेटैत समाचार सम्प्रेषणक हेतु बहरा जाइत अछि ।

● ●

६

मास्टर साहेबक घरमे सभ चिन्तित अछि । 'विजय जुलूशके देखबा लेल घरसँ खुशी-खुशी गेला ह' । पता नै एखन कत्त छथि । कहांदन वर्तो नै भेलै । आव फेर जुलूश, हुड़दंग होतै । एहिमे त आरो होहल्ला होएतै' - पत्नी कतेकबेरसँ अपने बरबरा रहल छथि । धीआपूता सटि कऽ बैसल छनि ।

तखने मास्टर साहेबकें दूरक दिआद अबैत छनि । सरिताकें उदास देखि पुछैत छै - 'भाउजू, दाजु कहां हुनुहुन्छ ?' (भौजी, भैया कत्त' छथि ?)

'हमहूँ त हुनके लेल फिरिशान छी । कहै छै वातो नै मिललै । बाबू, देखियौ अहीं कतौ । कोनो झेलमे नहि फंसि जाए ।' - सरिता देओरकें आग्रह करैत छैक । 'ठीक छै' - कहि ओ आगा बढ़' चाहैत अछि कि झमारल, झखारल मास्टर साहेब दुहरी पर जुमि जाइत छथि । अप ा होश तँ गुम्म छनि मुदा पत्नी, भाइ आ धीआपूताकें सन्तोष दैत परतारैत छथि - 'हौ, राजकाजमे एहिना होइछै । एखन कएबेर बैसत, कएबेर उठत । मुदा सहमति त हएबे करतै । देशके सवाल छै । मधेशक प्रतिष्ठाके सबाल छै ।'

बात बजैत-बजैत मास्टर साहेब दुरुखीमे राखल खुरसी पर वैसि रहैत अछि । हुनका सकुशल देखि सभक अनुहार पर सन्तोषक लक्षण देखि पड़ैछ ।

मास्टर साहेब भाइकें सम्बोधन करैत छथि - 'नरेन्द्रे, कह त हम पहाड़िया सभ एहि मधेश आन्दोलनसँ एतेक भयभीत किएक भऽ गेलिऐ ?'

'एहि दुआरे जे हमरा सभ पर आक्रमण होब' लागल अछि। तरह-तरह के धमकी आव' लागल अछि ।'-नरेन्द्रे एकटा खुरसी घीचि क' बैसैत कहैत अछि ।

'त ई धमकी, आक्रमण किएक ?'

'ई त हमरा नहि बूझल अछि। हम सभ त चुपचाप बाप-दादाक घराड़ी पर एकटा मधेशिए जकां बैसल छी । एक्के संग रहैछी, एक्के संग खाइछी ।'

'तोहर बात सांच छौ बाउ ! मुदा पूर्वेस काठमाण्डूक शासक सभ विभिन्न बहानामे अपन आदमी सभके मधेशक सरकारी जग्गा दऽ दऽ कऽ नै बैसौलकै ? बीघाक बीघा जमींदारी नै देलकै ? बेगारी खटबै, सलामी ठोकबै। कहलमे नै रहै त खल्ला उघारि दैक। कम शोषण नै कएने रहै ओइ समयके सामन्त सभ। पंचायत कालमे त आरो अनर्थ भऽ गेलै जखन सुकुमबासीक नामपर, विर्ता, हुकुम प्रमाङ्गीक नाम पर बन, जंगल आ जमीन सभपर ओम्हरका पहाड़िया सभके बैसा देलकै। ई सभ उचित रहै ?'

नरेन्द्रे चुप्प भऽ जाइत अछि। ओकरा दाजूक बातकें समभ्कबाक लेल माथपर जोड़ देब पड़ि रहल छैक। ओकरा बरु आश्चर्य लगैछै, दाजु आइ एहन बात किए बाजि रहल छथि। तएँ किछु जवाव नै दैछ।

'मधेश आन्दोलन जखन शुरु भेलै, लोकमे हिम्मत अएलै, अपन अधिकारक हेतु, सजग भेल। तखन सैयौं वर्षक जे शोषण आ उत्पीड़न रहैक ओ एहि घृणाक रुपमे एखन सोझामे आबि रहल छैक। एकरा अस्वाभाविक किए मानल जाए' - मास्टर साहेब अपन मोनक भरांस निकालि रहल छथि।

नरेन्द्रे साहस करैत बजैत अछि - 'काठमाण्डूक शासक सभक अपराधक फल हम सभ किएक भोगै छी ? हम सभ त कोनो जमीन नै छीनने छिऐ, ने कोनो तरहक झगड़ा, बातमे लागल रहैत छी ।'

मास्टर साहेबक तर्क छनि - 'तोहर बात ठीक छौ । मुदा शासक वर्गक संग लड़ाई त नमहर चलतै, हम सभ ओहने मुंह-कान-नाक बला सभ लगेमे छिऐ। जे सोझामे सएह बोझामे। लदनियां हमरे सभ पर लदा रहल अछि।'

'ई कहिया तक चलतै दाजु' - नरेन्द्र निराश होइत पुछैत छैक।

'रुकतै, ई क्रम रुकतै। हं, एहि संक्रमण कालमे बहुतोके क्षति बेहोर' पड़तै। जखन मधेशी मित्र लोकनि, एकर मुक्तिदाता लोकनि बुझथिन्ह जे सरकारक बदला अपने भाइ, दिआद आ मित्रकें प्रताड़ित कऽ रहल छी तं सचेत हएताह। बाउ, तहिआ तक धैर्य त राखही पड़तौ।'

नरेन्द्रे भैयासँ विदा लऽ दुरुखीसँ निकलि जाइत अछि। किरण, दुनू छोट-छोट भाइ आ बहिनक संग बापकें विस्मयक नजरिसँ देखैत अछि। आ मास्टर साहेब एहि सभसँ अनभिज्ञ खुरसीए पर निढ़ाल भऽ आँखि मुनि लैत छथि।

● ●

७

आन्दोलन थम्हलै नहि । ठाम-ठाम मुठभेड़क खबरि आबि रहल छैक । सरकारो जेना मधेशी नेताक ताकत तौलि रहल हो । बात आगाँ बढ़बैत अछि, फेर पाछाँ छीपि लैत छैक । चारू भरसँ दबाब छैक, मुदा आलटाल कऽ रहल अछि ।

संघीयता आ राज्यक सभ अंग पर मधेशीक पहुँच सुनिश्चित हएबाक प्राथमिक शर्त वार्ताक राखल गेल अछि । मधेशी सोनितमे आएल ज्वार एखनो शांत नहि भेल छैक । जोर अजमाइश जारी छैक । शहीदक संख्या बढ़िए रहल छैक ।

आन्दोलनक अनिश्चिततासँ बहुतोकें उठीवासक समस्या आबि गेल छैक । काम-धाम चौपट भऽ गेल छैक । डेढ़ मासक बाद सरकार जगलै आ २५ जुलाई २००७ कऽ धूलीखेलमे दोसर चरणक वार्ता भेल । सरकारी टीम दू दिनक तैयारीक समय मंगलकै आ २८ ता.क पुनः बैसल । हाथ लागल शून्य । ५ अगस्त २००७ कऽ तेसर बैसार भेल पार्क रीसोर्ट भीलेज, बूढ़ानीलकंठ । माओवादी प्रतिनिधिक कारणें फोरम वार्ता छोड़ि देलक । प्रधानमंत्रीसँ भेंट भेलैक मधेशी संयोजककें । २० अगस्त कऽ फेर चारिम बेर वार्तामे बैसल । मुदा आन्दोलनी शक्ति वार्ता छोड़ि सरकार पर गंभीर नहि हएबाक आरोप लगबैत ३१ अगस्त धरि अल्टीमेटम देलक । जँ एहि बीच वार्ता नहि तँ भयंकर आन्दोलन हयत - मधेशी नेताक चेतौनी छल ।

अन्ततः ३० अगस्त २००७ कऽ २२ बुंदे सहमति भेल । सौंसे देश राहतकें साँस लेलक । तत्काल सभ तरहक आन्दोलन स्थगित भऽ गेल छैक । युवा सभ ई समाचार सुनिते हेंजक हेंज जुलूश बना शहरमे निकलि पड़ल । नारा लाग' लगलैक - 'मधेशी एकता - जिन्दावाद । मधेश सरकार

- जिन्दावाद ।' ढोल-पीपही, बैण्डबाजा सभ जुलूशक आगां-आगां चलैत । अबीरक छीटा लोकक गाल आ कपड़ा दुनूकें लाल कैने जा रहल छैक । लगैछ - सौंसे संसारक उपलब्धि अपना छातीमे भरि कऽ सड़कपर लोक भूमि उठल अछि । दू सय चालिस वर्षक दासत्व सन जिनगी, मधेसीक अपमानजनक सम्वोधनकें हृदयमे समेटने मधेशी समुदाय आइ जेना ठीके उन्मूक्त भेल हो ।

मुदा एहि उपलब्धिक खुशीमे एक गोटे एहनो मधेशी अछि जे भीतरे-भीतर गलि रहल अछि । मधेश आन्दोलनमे निरन्तर लागल जनमोहन अधिकारी । खिन्न भेल घरमे पड़ल छथि । कैकटा बजाबा आबि गेलै जुलूशमे जएबा लेल । मुदा ओ 'मोन ठीक नहि अछि' कहि टारि देने छैक । वास्तवमे हुनका आइ एक्केटा बातकें चोट लागल छै' - 'ई आन्दोलन आर जे किछु देने होइक तेइसम् बुंदाक सहमति नहि कऽ सकल छैक, जाहिमे संवेगात्मक रुपें लिखल रहैत - 'एक मीतकें दोसर मीत संग रहबाक स्वतन्त्रता सेहो रहबाक चाही ।' अर्थात् जेकर लंगोटिया मीत मास्टर रमेश दिन-दिन दूर भेल जा रहल छैक । संगमे बैसबाले ओकरा हिचक होब लागल छैक । खाइ छल अपन आंगन, हाथ सुखबै छल हमर आंगन, आब तं पानो संगे खएबाक अवसर नै भऽ रहल अछि । कतेक दब्बू बना देने छैक ओकरा ई आन्दोलन' - जगमोहन मोनकें काबूमे राख चाहैत अछि, मुदा भऽ नहि रहल छैक ।

'नहि, चलैछी एक बेर अपनेसं मीतके बुझबै छिऐ' - जगमोहन एहि आन्दोलनी माहौलोमे कोनो तरहक खतरा उठब' चाहैत अछि । तैयार भऽ घरसँ बहार होइत अछि । सड़क पर डेग रखिते एक हुंज युवा सभ सौंसे देह लाल कएने, नचैत-गबैत आगाँमे आबि जाइत छैक । एक गोटे चिचिआ उठैत छैक - 'उवाह नेताजी छौ । उठा ।' छौड़ा सभ दोगैत अछि । मुह आ देह पर अबीर मलैत छैक आ कान्ह पर उठा नारा लगब' लगैछ - 'जगमोहन नेता - जिन्दावाद ।' जगमोहन के लगैछै ओ ओहि जुलूशमे नाचो-गाबो आ कि कपार पीटो । मुदा ओ किछु कऽ नहि पबैत अछि । जुलूशक एकटा अंग भऽ कऽ मुह पर जवर्दस्ती हँसी लबैत उधिआइत जुलूशक संग बह लगैत छथि ।

* * *

मधेशीक खुशी कहाँ टिक' देलकै नेपाल सरकार। फेर एक्के मासक बाद पुनः नयाँ आन्दोलनक घोषणा करए पड़लै। सहमतिक छबिसो बुंदा सिंहदरबारक फाइलमे दबा देल गेल रहै। फरबरी ९, २००८ ई. कऽ तीन मधेशी पार्टीक मोर्चा बनल आ संयुक्त मधेशी मोर्चा द्वारा अनिश्चितकालीन नाकाबन्दीक घोषणा भेल। पहिल बेर नेपालक शासक लोकनि त्राहिमाममे पड़ि गेलाह। सोरह दिनक नाकाबन्दीसँ राजधानी काठमाण्डूमे हाहाकार मचि गेल - ने, चाउर, गैस आ तीमन तरकारी। सभ बन्द। कच्चा पदार्थ बन्द, खाद्यान्न बन्द, इन्धन बन्द। चुनावक घोषणा भऽ गेल रहै। तखन बाध्य भऽ १६ गते फागुन कऽ आठ बुंदे सहमति भेलै आ सम्विधान सभाक निर्वाचनक तैयारी प्रारंभ भेल।

आन्दोलन शांत भऽ गेलै। सभ पार्टी चुनावमे अपन-अपन शक्ति झोंकि देलक। मधेशी पार्टी फुटियो कऽ नीक संख्यामे आएल। देशमे नव अध्यायक शुभारंभ भेल।

जगमोहन अधिकारी आ मास्टर रमेश उपाध्यायक संग-संग किरण आ राजीवक हेतु सेहो अपना अनुकूल किछु हएबाक संभावना देखा पड़लैक। चारुक मोनमे प्रसन्नता, उमंग आ सुखद आकांक्षाक जन्म होब लगलैक।

मास्टर रमेशकेँ अपन धरती प्रति फेरस मोह बढ़लै, जगमोहनकेँ फेरस मीतकेँ छातीमे साटि संगे गीत गएबाक अवसरक भान होब' लगलै, किरणकेँ राजीवसँ जुड़बाक पक्का विश्वास भऽ गेलै।

चारू दिश खुशी, सम्पूर्ण मधेशमे उमंग पसरि गेल। खुशीसँ लोक नाच' लागल।

● ●

८

सहमति भेलाक कैक मास बाद। शहरक एक भवनमे दश-बारह साइजकँ कोठरी। नीचाँमे सतरंजी, तोसक आ जाजिम बिछाएल। कोनमे चारि गोट झोड़ा धएल। ओछाओन पर देवालसँ ओंगठल चारि युवक। एकटाक हाथमे सिकरेट। चारु गंभीर छलफलमे।

सिकरेट बला दम सोंटैत बजैत अछि - 'नेताजीके आदेश छैक। सहमति भेला एतेक दिन भऽ गेलै, कोनो सुधार नै भऽ रहल छै। ई खस सभ मधेशीके अधिकार एना क' नै देतै। हमरा सभके सशस्त्र रुपसं लड़' पड़तै। एकरा सभ पर आक्रमण कर' पड़तै। कब्जा कर' पड़तै। तखने ई सभ सुनतै।'

'ई त बड़ जोखिमके काज है। हम मुठ्ठी भरि लोक प्रहरी-प्रशासनसं लड़ि सकबिही ?' - दोसर युवक टोकलकै।

पहिलाका युवक फर्शपर सिकरेट मिझबैत बाजल - 'जाहिया माओवादी जनयुद्ध शुरु कएलकै त कतेक रहै। वादमे सेनाके उपर भारी पड़ लगलै। भाइ, हिम्मत चाही। सभ ठीक भऽ जैतै।'

तेसर युवक बाजल - 'ठीक छै, एकरा लेल सेना, कार्यकर्ता तैयार कर' पड़तै जे लड़ि सकै, जान तरहत्थी पर लऽ कऽ संघर्ष कऽ सकै।'

पहिल युवक - 'हं, इहो ठीक बात छै। एकरा संग-संग हथियारो चाही ने।'

'आ, एकरा सभके लेल पाइ चाही, हिम्मत बला युवक चाही' - चारिम जे बडी कालसं गुम्म छल, बाजि उठल।

पहिल बाजल - 'ठीक कहै छौ करिया! एकरा लेल पाइ चाही आ जान प' खेल बला युवक सभ।'

दोसर युवक - 'इ सभ कत्तस भेटतै । नेताजी देतै कि ?'

पहिल युवक - 'नेताजी, तत्काल समूहके किछु पाइ आ एक-दूटा हथियार दऽ सकैछौ । और त अपने लाब' पड़तौ ।'

'केना रै, कत्तस लैबही पाइ आ आदमी !' - चारिम अविश्वाससँ बजैत अछि ।

'जेना हम तों समूहमे आएल छही, तैहना दोसरो भाइ एतैकिने । अपन मधेश प्रदेश पाब' के लेल किछु बलिदान त करही पड़तौ । आन्दोलनमे जे चालिसस उपर शहीद भेलै ओकर कोनो महत्व नै ' - पहिल भावुक भऽ चारु दिश तकैत बाजल ।

एक क्षण सभ गुम्म भऽ गेल । जेना किछु सोचि रहल हो । तकरा बाद पहिल, जे सम्भवत: एहि समूहक लीडर छल, बाजल - 'आब पहिने पाइ असूल' पड़तौ । बजाप्ते अपन समूहक पैडमे एतुक्का व्यापारी, पहाड़ी समुदाय सभके चिट्ठी दही आ पाइ मांग । धमकी दही, अपहरण कर । होइछौ त एक आधके घायलो कर । डर उत्पन कर । तखन पाइ औतौ आ ई सशस्त्र आन्दोलन आगा बढ़तौ । हथियार हम लाबि देबौ । काल्हि हम ओम्हर जाइछी, नेताजीसं बात कऽ सभ कुछ मिला अबैत छी । ठीक किने ?'

'हं, ठीक छै । अपन अधिकारक हेतु संगठित हैब जरुरी छै । चिनीकटोरा खएलासंग भूख नै मेटएतै, भरिपेट भोजन चाही, जे ई पेटवला सभ काठमाण्डूसं नीचां देखिए ने सकैअ । भाइ हैतै, जरुर आन्दोलन हएतै, मर आ मार के आन्दोलन हैतै...।'

पता नै चारुकें केना कऽ उर्जा आबि गेलै । सभ ठाढ भऽ गेल आ चारु एक्के स्वरमे चिचिआ उठल - 'जय मधेश '

खिड़की केबार बन्न ओइ कोठरीमे नाराक आवाज घुरिया क' नाचि उठल छल । चारू अपन-ओछानकें ठीक कऽ सुतबाक उपक्रम कर' लागल ।

● ●

९

लोकमे फेर एकबेर रोष उत्पन्न होब' लागल छैक । सहमतिक अनुसार सरकार मधेशी सभक मांगकेँ ठीकसँ सम्बोधन नहि क' रहल छल । मधेश आन्दोलन, जकरा लोक तेसर जन आन्दोलन सेहो कहैत छैक, लोकमे चेतना त लओलकै । बरु नेपालक एकटा पूर्व प्रधानमंत्रीक ई कथन जे मधेशी कायर होइत अछिकेँ कड़ा चुनौती दैत पचासो मधेशी शहीद भऽ गेल अछि । अपन मांग पर सरकारकेँ झूका देलक । मुदा आब तकरा लागू करबामे ढिलाई कऽ रहल अछि । हँ, संघीयताक मांगकेँ अस्वीकार कऽ सकबाक स्थितिमे नहि अछि, ई मधेश आन्दोलनक सभसँ पैघ विजय तँ छैहे !

शहरमे, गाममे चन्दा मांगब शुरु भ' गेल छैक । पहिल चरणमे सरकारक निस्क्रियता देखि लोक कम-वेस कऽ देबो शुरू कऽ देने छैक । 'चलु वार्ता आ सहमतिसं नै त हथियार आ आक्रमणसं त हो ।' अद्‌भुत मानसिकता छै लोकक । जाहि आतंकसँ पीड़ित भऽ शाँतिक साँस लेबाक अवसर पौने छल, आइ सरकारी नीतिसँ आक्रोशित भऽ मधेश प्रदेशक अभियानी सभक प्रति सहानुभूति देखा रहल अछि ई जनैत जे एकरा सभक हाथमे बन्दुक छै, जकर गोली जाति, समूह आ क्षेत्र देखि कऽ नहि चलै छै । आ.... देखाउंसे समूह बनैत गेल, फुटैत गेल । गनती कठिन भऽ गेलै ।

सम्पूर्ण मधेशमे विभिन्न समूहक नामपर चंदा, अपहरण, धमकी शुरु भऽ गेल छै । लोक आब त्रसित होब' लागल अछि । सभक मोनमे एकटा यक्ष प्रश्न नाच' लागल छै - 'की मधेश आ मधेशी प्रति, एकर उद्धारक प्रति समर्पित समूह सभ ई चन्दा, अपहरण आ हत्यामे सामेल अछि अथवा किछु दोसरो तरहक समूह सक्रिय भऽ गेल अछि !

प्रहरी प्रशासन अपना जनिते प्रयास कऽ रहल बतबैत अछि। शिकायत सुनैत अछि, लिखैत अछि। परिणाम शून्य। समाजमे आब त आतंक पसरए लागल छैक। पहाड़ी समुदायक लोकपर बेसी चाप बढ़लैए। किछु त पाइ कौड़ी दऽ बांचल अछि। बहुत त अपन घर-घड़ारी औन-पौन दाममे बेचि पड़ा गेल अछि। पड़ोसियो तकके खबरि नहि भेलै केना आ कत्त चल गेल।

सामाजिक, राजनीतिक विश्लेषक लोकनि मधेश आन्दोलनक ओटमे किछु अपराधी प्रवृत्तिक लोक ढाढ़ भऽ गेल हएबाक निष्कर्ष निकाललक अछि। ओ मात्र मौज, मस्तीकेँ लेल चन्दा, अपहरण आ हत्याधरि कऽ बैसैत अछि। मधेश आन्दोलन, मुक्ति ओकर आधार छै से ठोस कहल नहि जा सकैछ। बरु समाज एहने संगठनसँ बेसी पीड़ित अछि। जाहि संगठन पर मधेशी समाज विश्वास कएने छल, ओ जेना कातमे पड़ल जा रहल अछि। हड़कंप मचव' बला आगू आबि गेल अछि।

सामाजिक सौहार्दता पर ग्रहण लागल जा रहल छैक। एक दोसरकेँ शंकाक नजरिसँ देखब शुरु कऽ देने अछि। पुस्तौं-पुस्ताक ई सिनेह बन्दूकक एकटा गोलीसँ एना कए भसिआ जा सकैछ ? कोना कऽ समटाओत सभ सम्बन्ध एकसूत्रमे फेरसँ - आइ चिन्ताक विषय इएह बनल जा रहल छैक। आ एहि चिन्तामे कतेको परिवार दिन राति पेरा रहल अछि।

● ●

१०

एहने सन चिन्तामे भेर भेल दिन राति पेरा रहल छथि मास्टर रमेश उपाध्याय । सहमति भेलापर जुलूश संगे जोर-जोरसँ मुक्त हृदयसँ मधेश - जिन्दावादक नारा लगब' बला मास्टर साहेब आइ प्रताड़ित भऽ कुहरि रहल छथि। कए दिनसँ फोन आबि रहल छनि। दश लाख टका चाहिऐक कहाँदन। कहैत छनि जँ पाइ नहि भेटत तँ आंगनमे बम फोड़ि देत, धीआ-पूताकेँ उठाकऽ लऽ जाएत। आर पता नै की की कहैत छनि।

अपने, पत्नी, आइ.एस.सी. मे पढ़ैत बेटी किरण सभक चेहरा उड़ल रहैत छैक। कत्तसँ ओतेक पाइ लाओत ओ। संचय कोषकेँ पाइ लऽ कऽ घर बनौलक। एखनो किछु पाइक कर्जमे अछि। घरो बेचतैक त पन्द्रह बीसो लाख नहि दैतै। एखन त दामो नहि दैत छैक। भऽ सकैछ पन्द्रहो लाख नै दैक। तखन बाल बच्चाकेँ लऽ कऽ कत्त विलटत। ओकर त सभ पुश्ता एत्तहि जनमल, बाँचल। एही माटिमे मिल गेल। ओ जैबो करौ त कत्त ? मास्टर साहेब दिन राति एही गुनधुनमे बितबैत छथि।

कैक दिनसँ स्कूल जाइत छथि। कहुना क्लाशो करैत छथि। विद्यार्थीकेँ की पढ़बै छै, सेहो ठीकसँ धेआन नै रछन्हि। घर धूरि अबैत छथि।

पत्नी उदास पतिकेँ मुह तकैत कहैत अछि - 'बेसी नै सोचू। मीतके कहियौन, किछु करताह। दक्षिणवारी टोल पर कामेश्वर बाबू छथि। बड़ चलल-बनल लोक छथि। कोनो बात त बतौताह। एना गललास अहीं नहि, पूरा परिवार दुखी भऽ रहल अछि।'

मास्टर साहेब नमहर सांस छोड़ैत बजैत छथि - 'से त छैहे। अपना सकमे त किछु ने छै। तखन देखल जएतै। घरे बेच पड़तै त बेचबै आ

कतौ दोसर नगरमे चलि जाएब । अपन दिआद सभ कहिया ने चलि गेल । गाममे तकलो पर पहाड़िया सभ नै भेटैत छैक । भगवानकेँ उहे लिखल छै धरती छोड़ाब के त ककर की सक छै !'

कोनटामे ठाढ़ि किरण बापक बात सुनलक त लतेपते अपन कोठरीमे भागल आ केबार भिड़ा कऽ भोकासी पाड़ि कान' लगलैक । मुदा मुहकेँ दाबि कऽ । किछुकाल भेलै त मोबाइलमे एकटा नम्बर लगौलक आ ओम्हरसँ उतरा अएला पर बाजलि - 'राजीव, आब हमरा अहाँक भेँट नहि हएत । बाबूजीके फोन कऽ कऽ पाइ मंगै छै लोक सभ । धमकी दैत छैक । बाबूजी घर बेचि कऽ कतौ अन्त चलि जएबाक बात कहै छथि ।'

....

'नहि, आब संभव नहि ! बिसर' पड़त ।'

तावत मास्टर साहेब आंगनमे अरगनीपर सुखाइत अपन गमछा लेबा लेल जाइत छथि त बेटीकेँ हिचुकैत सुनैत छथि । लगै छनि ई किए कनै छथि । सोर पाड़बाक मोन होइ छनि, फेर केवार लग जा केवारकेँ धकलैत छथि हौलेसँ । केवार भीतरसँ बन्न रहैत छैक । ओ हल्ला कर' चाहैत छथि, मुदा भीतर किछु आवाज सुनि पड़ैत छैक । किरण कानि-कानिक' ककरोसँ बात कऽ रहल छलि - 'बाबूजीक हालति ठीक नै छै । हम कोनो हालतिमे छोड़ि नै सकैछी । जे भेलै से भेलै, बस एतबे तक साथ छल ।' आओर हिंचुकि कऽ कान' लगैत अछि । मास्टर साहेबकेँ बुझबामे भांगठ नहि रहलनि जे बात कोनो प्रेम सम्बन्धक छैक । 'एना तरेतर की भऽ गेल' - एकटा आर चिन्ता सवार भऽ गेलनि । ओ चुपचाप आंगनसँ बहरा गेलाह ।

● ●

११

सरिता आइ कैक दिनसं बेटीकेँ चुपचाप घरमे पड़ल देखि रहलीह अछि । पहिने तँ भेलै जे ओकरा देहक कष्ट छै ।' पुछबो कएलकै तँ नहि किछु हएबाक बात कहि कऽ टारि देलकै । मुदा जखन पाँच दिन भऽ गेलै आ ने घरकेँ कोनो काम करैक आने कओलेजे जाइक त मायकेँ मनमे किछु शंका उठलैक । पतिक कहल बातमे ओजन बुझाए लगलैक । किरणकेँ कोठरीमे जाकऽ ओकरा कातमे बैसि गेलि । माथ हंसोतैथ दुलारसँ पुछलकै - 'बेटी, एना गुम्म किए पड़ल रहैत छे । कोन बात भेलौअ ?'

किरण किछु नहि बाजलि । माय जखन दोबारा पुछैत छैक त ओ उठि कऽ वहराए चाहैत अछि । आ बजैत अछि - 'नै गे ! कहने रहियौ, किछु नै होइए ।'

'तखन कलेज कैला ने जाइछे । देहो हाथके सैहार नै करैछे । केना कोठरीमे किताब आ कपड़ा सभ छिटाएल छौ' - माय कोठरीमे चारुकात नजरि खिरबैत कहैत छैक ।

'ई सब आब कऽ कऽ की हएतै । जखन बेच-बाइच कऽ जाही के छैक त सम्हार के कोन काम ।'

'ई त अपना बशमे नै है बेटी । धमकी अबैहै । बहुतो लोकके उठीवास भऽ गेल है । तैस तोहर बाबू ई निर्णय कएलकौअ ।'

'त हम कहां कहै छियौ नै जाएला । जहां-जहां ल जएबै त जएबे करबौ । तोहर आश्रित सन्तान छियौ ने ।'

'एना, कटाह बात कैला बजै छे बौआ । बापक मुह आ देह-दशा नै देखै छही । केना उजरल आ सुखाएल लगै है । दिन भरि विद्यार्थीमे लागल, मीतक ओत्त खान-पीन, गायन-वादन ! देखै छही किछु ।'

किरण पुन: बैस जाइत अछि । मायक मुह दिश एकटक देखए लगैत अछि । आँखिमे नोर छलछला आएल छैक । किरण भावुक भऽ बजैत अछि - 'माय हमर मोनमे घर-परिवारक समस्या नै अछि से बात नै । हमरा त रहए हम इंजिनियर वनि कऽ घरके सम्हारब । लेकिन आब संभव लगै छौ ?'

सरिता चुप्प भऽ गेलि । ओकरा मनमे किछु गुनधुन भऽ रहल छैक, मुदा बेटीसँ पुछबाक साहस नहि भऽ रहलैक अछि । लेकिन पुछ त पड़तै । मास्टर साहेब ई जवावदेही दऽ देने छथिन । तखन कोना पुछी सएह नहि फुराइ छै सरिताकेँ ।

'माय, चुप किए भऽ गेले । बाजने किछु । हम तोरा सबस अलग सोचै छी की ! बाबूजीक अवस्था, दुनू बौआक भविष्य, हमर योजना ई मधेश आन्दोलन गीड़ि लेलक । इएह सोचि कऽ मोन दुखित अछि ।'

सरिता कनेक हिम्मत करैए - 'बेटी कह त, तों ठीके एहीला दिन राति कनैत रहैछे ।'

किरण आश्चर्यसँ पुछै छै - 'तोरा के कहलकौ जे हम कनै छी । हम कनै कहां छी, सोचै छी । मन नै लगैए पढ़मे, किछु करऽ मे ।'

'बौआ, ठीके तों हमरा सभक आशा छे । किछु अओर बात छै त बाज खुलिकऽ । हम सभ आन नै छियौ ने !'

किरण नीचाँ मुह कऽ लैत अछि । ओकरो भीतर जेना बिहाड़ि उठल हो । माथ उठबैत छैक आ मायकेँ मुहदिश ताकि भोकासी पाड़ि कान' लगैछ । माय भरि पाँज कऽ छातीसँ लगा चुप कर' लगैत छैक ।

कानब कनेक थम्हैत छैक तँ पुछैत छै - 'आब कह तों दुखी किएक छे ?'

किरण सम्हरैत अछि आ मायकेँ कथा सुनबैत छैक - 'तोरा सभके घर वेचि कऽ अन्त चल जएबाक बात सुनलियौ त ठीके हमरा रहल नै भेल आ आबि कऽ अपन कोठरीमे भरि पोख कनने रही । चलि जएबाक दुख त रहबे करए एकटा दोसरो बात रहैक ।'

माय सचेष्ट होइत छैक - 'दोसर कोन बात ?'

'हम राजीबसं प्रेम कर' लागल छी । आ दुनू गोटे विवाह करबाक विचारो कऽ लेने छी ।'

'के छै राजीब गे ? आ एतेक भारी निर्णय विना हमरा सभके कहने कोना कैलही ?'

'माय, ओ दक्षिणवारी टोलक बढ़का घरके बेटा छै । बी.एस.सी. मे पढ़ैत छैक । नीक व्यक्ति अछि । कओलेजेमे मीलि गेलै, की करितिऐ । जहां तक तोरा सबके जानकारी देबके बात त तों सपनोमे नै सोच हम विना पुछने किछु करिती ।'

'त, आइ तक बजलिही कैला नै ?'

'कहितियौ, ई मधेश आन्दोलन शुरु भऽ गेलै । लोक सडक पर उतिर गेलै । पहाडी-मधेशीमे भेद छुटिआब' लगलै । हिम्मत नै भेल तोरा सबके किछु कहके । भेलै, शांत होतै त कहबौ । ताबेमे जाएके नियार भऽ गेलै त हम की करितिऐ' ।

सरिता गुम्म भऽ गेल । बेटीक व्यथा बुझवामे ओकरा कोने कसरि नहि रहलै । लेकिन आब किरण की करत से बात धरि बुझए चाहैत छल । पूछलक - 'आब की करविही ?'

चोट्टे उत्तर देलक किरण - 'की करबै ! हम कहि देलिऐ, आब संभव नै अछि । हम मां-बाबूक संग जा रहल छी । सभ विसरि जाउ !'

'ओ की कहलकौ ?!

'ओ त कान' लगलै आ ई असंभव थिक बाजल । अहां विना हम एक्को पहर एत्त रहि नहि सकब । बरु जल्दीए आबि जाउ से धरि कहैत रहल ।'

'तों की कहलही ?'

'हम मना कऽ देलिऐ । आब घर-परिवारके एहन हालतिमे छोड़ि कऽ हम कतहु नै जा सकैछी । कहि देने छिऐ । आब फोनो अबैछै त नै उठबै

छीऐ। ने कओलेजे जाइछी जे कतहु भेंट ने भऽ जाए... । कह हम की करु ?!

बढ़का बोझ माथपर धऽ देलकै किरण सरिताकेँ। दुनूक बीच एतेक लगक सम्बन्धकेँ तोड़बो कठिन, ने ई निचैनसँ रहत ने ऊहे। की करौक ओ, वेचैन भऽ जाइत अछि सरिता।

'माय तों चिन्ता नै कर। जे तों सभ निर्णय लेने छे, हम साथ छियौ। हं, बाबूजीके हालत एखन बड़ खराब छै। चिन्ता घेरने छैक। ई बात हुनका नै कहिहै।'

सरिता बेटीक मुह देखैत अछि आ दुनू हाथसँ लगमे लाबि चुम्मा लऽ लैत अछि। दुनू माय-बेटी भावुक भऽ जाइत अछि।

सरिता कहैत छैक - 'बेटी, तोरा बाबूजीके सभ पता छौ।'

'से केना गे ?'

'जखन तो कोनटा लगसं आबि अपन कोठरीमे कनैत रही आ राजीवके फोन करैत रही, तखन ओ आंगनमे आएल छलाह आ तोहर कानब सुनि तोहर दरबज्जा धरि गेल छलाह। तखने तोहर बात सुनलखून्ह। ताहीसं एहि बातके खुलासा कर'लेल हमरा भार देने छलखिन।'

'माय, बाबुओ जानि गेलखिन्ह नै! हम कोन मुहें हुनका सोझा निकलबै।'

'सभ ठीक भऽ जएतै। समय घुरतै। बात कैलखिन्ह ह। मन शांत होइते हम तोहर बात कहबनि। ओ जरूर मानि जएताह। खाली ओम्हर मानतै कि नै, ओकर बाप-माय!'

'तकर भार राजीवके छै माय। ओ मना लेत।' - किरण प्रफुल्लित देखि पड़ैत अछि। कैक दिनसँ कओलेज नहि गेल रहैछ। ओ तुरत कपड़ा बदलैत अछि। किताब उठबैत अछि आ कओलेज दिश विदा भऽ जाइत अछि। माय टुकुर-टुकुर बेटीकेँ खुशीसँ उठैत पयर पर नजरि टिकौने रहैत अछि।

● ●

घरमुहाँ

(उपन्यास)

भाग - दू

१

रमेश उपाध्याय नगरक पुरान वासिन्दा छथि। हुनक पुर्खा कहिया मधेशमे आबिक' बैसल रहथि रमेशकेँ पता नहि छनि। ओ बाबा धरि देखने अछि - एही माटिमे खेलैत, काम करैत, जीवन वितबैत। तहिया ओ बड़ छोट रहए। तहिएसँ अपन बाप-दादाकेँ एहि समाजमे घुलल-मिलल देखैत रहलासँ ओ कहियो अपनाकेँ एहि माटि-पानिसँ फराक नहि बुझलनि। कहियो काल संगतमे अथवा स्कूल जाएबेरमे टोपी लगा लेब एक बात, नहि त खाली माथ, कहियो काल पेंट शर्ट, पायजामा-कुर्ता आ नियमित रुपें धोती-अंगा बस। नगरमे रमेशकेँ लोक मास्टर साहेबक नामसँ बेसी बजबैत छलैक। ओ कतेकोकेँ पढ़ौने छथि जे एखन नीक नीक पदपर काज क' रहल अछि। उमेर पचास नहि टपल हयतैक। एखनो नियमित स्कूल जाइत छथि आ धीआपूताकेँ सेहो अपना संगे स्कूल ल' जाएल करैत अछि। सरकारी विद्यालयमे अपन छओ वर्षक बेटा आ दश वर्षक बेटीकेँ पढा रहल छथि। एकटा सत्रह वर्षक बेटी छनि जे आइ.एस.सी.मे पढ़ैत छनि। सभ एकसँ एक तेज। मास्टर साहेब स्वयं सभकेँ अपने नियमित पढ़ाओल करैत छथि।

पत्नी सरिता घर-आंगनक काजमे लागल रहैत छैक। वाल बच्चाकेँ देख-रेख, खान-पीन, स्कूलक तैयारी सभ हुनके जिम्मामे छनि। मास्टर साहेव जतेक सोझ, पत्नी ततबे चौचंख, काजमे माहिर। एक ड़ेढ वीघा जमीन गाममे छनि, जे बटैया लगा देने छथि, जे हथउठाई अबैत छैक सन्तोष कर' पड़ैत छनि। बाप-दादाकेँ जोडल जमिन-जथा छनि, कोहुना डेबिरहल छथि। ओहो आब कब्जा क' लेतनि सएह खबर आएल छनि। कोहुना कर्जो ल' फूसकेँ घर तोड़ि क' तीन कोठरीकेँ पक्की घर बना

पौलनि अछि। घरपरिवार ठीकेठाक चलि जाइत छनि। बेगरता परलापर मीत नीक हाथ पुरै छनि।

मास्टर साहेबक सभसँ प्रिय छथि मीत जगमोहन अधिकारी। अधिकारीसँ भ्रममे नहि पड़ी ओ यादव छथि आ गामक कहबैका सेहो। नीक वेजायमे लोक, समाज पुछारी करैत छनि आ समाजसेवी कामेश्वर सिंहक संग हिनको रायकेँ महत्व देल जाइत छैक। वड़ मान-मनौतीसँ एकटा बेटी भेलनि, जकरा सोलहे वर्षमे विवाह क' देलखिन्ह। मैट्रिक पढ़ा क'। नाम रखने रहे मनतोरिया। बड़ आश रहनि, से बेटी भेलापर झुझुआन लागल रहै। ओना ओ अपन बेटीकेँ, बेटो रहितै तँ तेहन नहि मानितै, बड़-सिनेह करै। ओ की करै, मानै त ओकर मीता मास्टर साहेब। धीआपूतामे कोरामे गूंह,मूत धरि करै, पढ़ब' बेरमे कान्हपर लादि स्कूल ल' जाइ आ विआहमे कन्यादानक पुरा विधि ओ जा धरि नै कैलकै चैन नहि लेब देने रहै। बेटीक विदाइमे की कानल रहए जगमोहन आ रामपुरवाली, बफारि तोड़ि क' चिचिआइ मास्टर साहेब आ ओकर पत्नी सरिता। तमाशा लागि गेल रहै दरबज्जा पर। एहन प्रेम छै दुनू परिवारमे।

आइ मास्टर साहेब कैक मासपर निचैनसँ घरमे छथि। कहला-सुनलाक असर हेतै, फोन बन्द छै। जीवन सरल भ'गेल छैक। मास्टर खुरसीपर अंगनइमे बैसल छथि आ जगमोहनक बेटी मनतोरिया बारेमे सोचि रहल अछि - मीता ककरो सनेस ल' क' पठौने रहै बेटी लग। विदागरियो मंगने रहै। कहाँदन ओकर ससुर अगिला शुकरके दिनो द' देने छैक। विआहक बाद एक-दू बेर मात्रै आएल अछि बचिया !' हँ, मास्टर साहेब ओकरा दुलारसँ बचिया कहैत छथिन्ह। -एहि बेर बहुत दिनपर आबि रहल अछि। पता नै मीताक ओइ ठाम की हएत हएतै, ओकरा ओहि ठाम त अपने बेटी अएबाक तैयारी चलि रहल छैक। बचियाक पसिनक अचार बनाओल जा रहल छैक, पेरुकिया, खाजा बनि रहल छैक। मास्टर साहेब नियारने छथि आइए बजार जाक' नीमन साड़ी कीनि क' लाओत बचियाक लेल।

बचिया मोन पड़िते मास्टर साहेबकेँ अपन बेटी किरणक स्मरण भेलै। चारि त बजिते हएतै, दुइए बजे धरि क्लाश छलै,कत्त अछि, की भेलै ! आएल रहैत त ओकरे लऽ कऽ बाजार जइएहुं - 'एहने सन सोचमे पड़ल मास्टर साहेबकेँ ध्यान भंग कएलक हुनक मोबाइलक आबाज-'सागपात तोड़ि तोड़ि दिवस गमएबै हे हम मिथिलेमे रहबै ।' एह खूब मज्जाक छै ई रींगटोन- मीत भरबा देने रहै । दुनू मीत जखन मस्तीमे रहैत अछि तँ इएह गीत गाओल करैत अछि । एखनो जखन ई गीत बजलै तँ ठोढ़पर मुस्की दौगि गेलैक मास्टर साहेबकेँ । जेबीसँ मोबाइल निकालि कानसं सटौलनि -'हेलौ !' ओम्हरसँ की पुछलकै पता नहि हुनक अनुहार स्याह भऽ गेलनि । हाथ थरथर काप लगलनि आ धम्मसँ खुरसीपर बैसि रहलाह । हुनका किछु नै फुरा रहल छलनि -'सभकिछु शांत भेलाक बादो ई की ?'

पत्नी आंगनसँ बहराइत छलीह झोड़ा लेने । सम्भवतः किछु लाब जाइत छलीह दोकानपर । पतिकेँ एहि तरहेँ घामे पसिने नहायल आ अर्धचेतन अवस्थामे देखलथि तँ दौड़लीह । चिचिआए लगलीह - गे किरिनमा, बौआ अनूप, जानकी कत्त छें, दौड़...। लगमे जा पतिसँ पुछलनि - 'की भेल अछि, एना किए कएलहु ?'

बेटी जानकी कतौ खेलैत छलीह । दौगि कऽ आगू अएलीह । माय आदेश देलकै - 'जो आंगनसं लोटामे पानि लऽकऽ आ ।' जानकी दौगलि आंगन दिश । हेटौंडा बाली फेर पुछलकै -'कहु ने,की भेल ?'

'की हएत, रक्षसबासभ किरणके उठाकऽ लऽ गेल ।' - आ भोकासी पाड़ि कान लगलाह । मायो चिचियाए लगलीह । कनेक थम्हलि त उलहन दैत बजलीह - 'हम कहने रही ने, चलू एहि ठामसं । आब हमरा सभके अइठाम रहबाक कोनो अर्थ नै । ई बेर-बेर पाई मांगब, मारबाक, अपहरणक धमकी । आइ त बेटियो के उठा कऽ लऽ गेल ने ! नाक-मुंह कारी भेल ने ।'

मास्टर साहेबक होस गुम्म भऽ गेल छनि । पत्नीकेँ की जवाव दितथि । 'ओ त अपन पुर्खाक डीहपर रह' चाहै छलाह । एहि धरतीकेँ छातीसं लगौने छलाह । मुदा २०६३ सालक मधेश आन्दोलनकेँ बहाना

बना किछु गुट सभ पहाडी-मधेशी कऽ देलक । मूल मुद्दा तरमे झंपा गेल । आइ ने काल्हि ई त हयबाकेँ छलैक - मास्टर साहेबकेँ ज्ञात छलै । मुदा दश लाख टकाक मांग ओ पूरा नै कऽ सकैत छलाह । ई हुनक सामर्थसँ बाहरक विषय छलै । बेटीक अपहरण करबाक धमकीकेँ ओ सहजरुपे लेने छलाह - 'एतेक नीचतापर त नहिए गिरतै ।' फेर ई कोना भऽ गेल !

पत्नी फेर टोकलथिन - 'आब की हएत ?'

मास्टर साहेब थाकल स्वरमे बजलाह - 'हमर हाथमे किछु ने अछि । की करु किछु ने फुराइए !'

'प्रहरीमे खबर कऽ दिऔ, उइह किछु करतै'

'नै,नै, एहन गलती नै । ओ सभ प्रहरीमे खबर करब त बेटीक मरल मुहदेखब कहने छल । ओ सभ झूठो नै बजैत अछि । एहन गलतफहमीमे कए गोटेक जान गेलैए ।'

'त की एहिना बैसल रहने हमर बेटी, सुगिया बेटी घूराओल जा सकैए । किछु ने किछु त करही पड़त' - मायक चिन्ता बढ़ले जा रहल छैक ।

'पता नहि हमर बेटी कोन हालतिमे होंत । कत्त रखने अछि चंडलबा सभ' - मास्टर साहेब गुनधुन करैत बजैत अछि । आ अखरे चौकी पर चितंगे ओलरि जाइत छथि ।

● ●

२

राजमार्गसँ लगभग दश कि.मि. उत्तर चुरे पर्वतमालाक फेंदमे एकटा खण्डहर जकाँ छैक । प्रायः कोनो प्राचीन मंदिरक छाँट छैक । देवाल सभ ढहल, छतक नामो निशान नहि । मुदा बढ़का-बढ़का ईंटसँ बनल एकटा कोठरीक चारुकातक देवाल ठाढ़ छैक । उपरसँ जंगली झाड़पात एना कऽ लतरल छैक जे बाहरसँ भीतर देखब कठिन छैक ।

ओइ खण्डहर बनल कोठरीमे हाथ आ मुह बान्हि किरणकेँ राखल गेल छैक । दूटा गुण्डासन छौड़ा हाथमे देशी पेस्तौल लेने पहरा दऽ रहल छैक । किरणक आगां कागजकेँ प्लेटमे पुरी आ तरकारी राखल छैक । पीबाक लेल पानिक बोतल सेहो राखल छैक । दुनू बेराबेरी किरणसँ खएबाक लेल आग्रह करैत रहैछ । ओ सभबेर नकारि दैत छैक । दुनू जेना ओकरासं तंग आबि गेल छै । एक बजैत अछि - 'पता नहि, बौसके एहने लोक उठबैत आनन्द किए लगैत छैक । ने पाइ, ने सहयोग, लाख झंझट ।'

एक बेर फेर आग्रह करैछ - 'खाउ ने । भोरसँ एक घोंट पानि आ एक्कोटा दाना मुंहमे नहि गेल है । केना जिबै ?

'ओहुना अहांसभ हमरा मारबे करब । हमर पिता ने दशलाख टका देताह ने अहां हमरा छोड़ब । तखन ई मरकौर खाइए कऽ की करबै ?'

'आ जं अहां नै खाएब आ किछु भ गेल त हमसभ मारल जाएब । तै स गोर लगैछी, दुइयो कौर मुहमे ध लिअ ।'

किरण दुनूक अनुनय विनय सुनैत अछि आ मनेमन ओकरा सभपर दयो आब लगैछै । दयाक कारणो छैक । जखनसँ एकरा सभक फन्दमे ओ पड़लि अछि ई दुनू ओकर नीक खियाल रखैत आबि रहल छैक । एहिना परतारि कऽ खाना खएबापर मजबूर कऽ चुकल अछि ओ । 'मुदा आइ एकरा सभक कोनो बात ओ नै मानत'-किरण दृढ अछि ।

तखने दुनू महक एक गोटेक मोबाइल बजै छै । के अछि ? बास छै रौ, की कहै है, देखही' - एकगोटे उत्सुकतासँ बजैत अछि । मोबाइलवाला- 'जी, होतै, ठीक है' मात्र अदबसँ बजैत मोबाइल बन्द कऽ दैत छैक । 'की कहलकौ ?'- दोसर छौंड़ा प्रश्न करैत छैक । पहिनुका गंभीर होइत कहैत अछि -'कहलकैअ जे सात दिनके समय देने है । दश लाख लऽ कऽ नहि आओत त एहि छौंड़ीके सिन्धुलीके जंगलमे लऽ जाकऽ उड़ा देब ला ।'

ई बात सूनि कऽ किरणक होश गुम्म भऽ गेलै । माने आब ओ ठीके जिवित नहि रहि पाओत । सभ सपना चकनाचूर भऽ गेलै । भेल रहै इंजिनियर बनि कऽ बापकेँ किछु राहत पहुँचाओत । आब त निश्चित छैक, ने बाबूजी पाइ देथिन्ह ने हमर जान बचत । किरण ओत्तहि निढ़ाल भऽ गेलि ।

तखने खरखराहटकेँ आवाज अबैछै । दुनू सतर्क भऽ जाइछ । एकटा मोबाइल लगबैत अछि । ओम्हरसँ खबरि अबैछै । अपन साथीकेँ ओ दहशति भरल आंखिसँ निहारैत कहैत छैक - 'भाइ, आब त प्राण नै बचतौ । पुलिस आबि रहल हौ । लगैए सार मस्टरबा पुलिसके कहि देलकै । लेकिन पुलिस एत्त केना आबि गेल । ई त अत्यन्त सुरक्षित ठाँव छलै । तैयार रह ।' दुनू पोजीशनमे आबि जाइत अछि । एकटा किरण दिश गुम्हरैत कहैत छैक- 'ठीक छै, हम सभ ओहिना नै मरबै, तोरा संगे मारने जैबौ । कनी देख त लिऐ, पुलिस की करैए !'

आठ-नौ गोटे प्रहरीक झुण्ड लग आबि जाइछ । चारुकात खिरल छैक । अगलबगल खोजि रहल छैक । किरणकेँ राखए बला ठाँव ठीके सुरक्षित रहै छै । कोनमे झाड़-पातसँ झांपल, जेना वर्षहुसँ ओम्हर केओ नै गेल हो ।

एकटा असइ, लगैए ओकरे कमाण्डमे प्रहरी सभ आएल छल, ठीक ओही कोन लग आबि ठाढ़ भऽ जाइछ । दुनू छौंडा अपन-अपन घोड़ापर आंगुर कड़ा कऽ दैछ । मुठभेड़क संभावना बढ़ि रहल छैक ।

दोसर दिश खिरल प्रहरी सभ ओत्तहि जम्मा होइत अछि । असंइ पुछैछै -'के भो ? की भेलौ !' ओ सभ माथ डोलबैत उत्तर दैछ - 'कतै देखिएन । कतौ नै देखलिऐ ।' असइ एक्के बेर उत्तेजित भऽ जाइछ - 'साला, मोराहरु गलत सूचना दिन्छन् र हामीलाई ज्यान जोखिममा पारेर यस्तो बीहड़मा आउनुपर्दछ । खै त, केहि छैन ! ल, हिंड ! (सार सभ गलत सूचना दैत अछि आ हमरा सभके जान जोखिममे पाड़ि एहन बीहड़मे आब पड़ैत अछि । कहां कतौ किछु छै ! चला) प्रहरी सभक पदचाप क्रमशः क्षीण होइत जाइत छैक, एम्हर दुनू छौंडाक जानमे जान अबैत छैक । करिकबा छौड़ा गुम्हरि कऽ किरण दिश तकैत छैक - 'खैर अखनु त बांचि गेले, लेकिन बौसस नै बचबे । पुलिसमे खबर !'

किरण चुपचाप पड़ल रहैत अछि ।



३

मास्टर रमेश उपाध्याय खुरसीपर बैसल गंथन-मंथन कऽ रहल अछि । लागल रहै सभ ठीक भऽ गेल छैक । सहमतियो भेलै चुनावो भेलै । राजकाजमे सभ लागि गेल अछि । जीवन सहज भऽ गेल रहै मास्टर साहेबकैं । आ आब विचारो भेल रहै जे दुनू परिवारमे वात चला देल जाए । जहियासँ मायसँ बात फरिछा गेलै, किरण दिन राति फुदकैत रहैए । घरमे सभ गतवर्षक पीड़ा बिसरि चुकल छल । मुदा ई फेर ककर उसकैलापर गड़ल मुर्दा उखारल गेल छैक । आ आब त हदे कऽदेलकै - 'एह हमर फूलके, प्राणके उठा लेने अछि । धन आ इज्जत दुनू गेल । ताहूमे पाइ देबैक त बेटी बांके जंगलमे भेटतै । नहि तं सिन्धुलीके जंगलमे लऽ जा कऽ गरदनि छपकि देतै ।' मास्टर साहेब मनेमन हाक्रोश कऽ उठैत छथि - 'रे चंडलबा, छपकबे त हमरे गरदनि छपिकि ले, ओइ निर्दोष बच्चीके कोन दोष छै !'

मीतोकैं खोजबीन भेल अछि । ओ भारत दिश गेल छथि एक सप्ताहक लेल । पता नहि हुनका एहि बातकैं पत्तो छनि कि नै । ओ रहितथि त किछु निकास तँ दुनू मीत मीलिकऽ निकालितहुं । एहने सन उधेड़बुनमे पड़ल मास्टर साहेबक ध्यान तोड़लकनि ओहिवाटे जाइत पं. चन्द्रशेखर मिश्र । मिश्र -'की औ, मास्टर साहेब ! कथीक गुनधुनमे पड़ल छी ?'

मास्टर साहेब सहज होइत प्रणाम करैत छथि आ आग्रहपूर्वह दोसर खुरसीपर बैसबाक अनुरोध करैत छथि ।

'नहि कोनो, अपने दीनदुनियांक बात मोन पड़ैत अछि ।'

'हँ, कोनो जोगाड़ लगलै की ? बड़ अन्हेर भऽ गेलैए ई । कहू त 'ई केहन आन्दोलन छै जैमे बेटी पुतहुकैं अपहरण कऽ लेल जाइ आ औकातसँ

फाजिल पाइ माँगल जाइक' - पं.जी कनेक विस्तारसँ सहानुभूतिक हेतु शब्द गढ़ैत छथि ।

'पं.जी, अहीं कहू, एकटा स्कूल मास्टरक लेल लाख टका बढ़का बात छै, ई त दश लाखक बात छै ।'

'सवाल बेटीक अछि ने ! अपन सक त अछि नहि । किएक ने पुलिसकेँ कहल जाए । ओहो तँ अपराधीकेँ पत्ता लगौतै ?'

'मिश्रजी, आइ धरि कएटा अपराधी पकड़ाएल अछि ? उनटे सुनैछी कमिशने खाइछै ई चण्डलबा सभ । तहुमे हमरा कहने अछि अपहरणकारी सभ जे पुलिसके नै कहबा लेल । हम की करु ! केना कहियौ पुलिस के ?'

'नै, नै ठीके कहलहुँ, एहन गलती नै । इज्जत आ धर्म दुनू संकटमे पड़ि जाएत । ई जे अपहरण, लुटपाट होइछै से की विना ओकरा सभकेँ जनतबे केँ ? औजी मधेशमे तीरसठि सालक आन्दोलन तँ जहां मधेशीकेँ प्रतिष्ठापित कएलक, ओकर प्रतिष्ठा बढ़ौलक ओत्तहि किछु लोक एकरा नामपर उठि बैसल । केओ मधेश मुक्तिक नामपर त केओ मौजमस्तीक नामपर । पुलिस साफ नहि अछि, नाहकमे बेटीक जान खतरामे पाड़बैक । अहाँ ठीक सोचलहुँ । अपने किछु सोचु ।' पं. जीक बात मास्टरकेँ चितमे लगैत छैक । ओ गुम्म भऽ जाइत अछि ।

तावत एकटा यजमान पं. मिश्रकेँ बजब चल अबैत छैक । ओ उठि कऽ फेरस विचार करबाक बात कहि घर दिश विदा भऽ जाइछ ।

एम्हर मास्टर साहेबक कनियां ससरि कऽ लगमे अबैत छनि । एक्के दिनमे चेहरा उड़ि गेल छनि । घरबालीकेँ देखि कोढ़ फाटि जाइत छनि । घरबाली सेहो कान' लगैछ । माय-वापकेँ कनैत देखि दुनू भाइ वहिन सेहो कान लगैत अछि । बड़ कारुणिक माहौल भऽ जाइत अछि ।

मास्टर साहेबक मोबाइलक घंटी बजैत अछि । सभक कननाई तँ थम्हि जाइछ मुदा चेहरापर डर पसरि जाइछ । डरे घामेपसीने नहा जाइत छथि - 'पक्के ओही चण्डलबा सभके फोन हएत ।' कानसँ लगा 'हेलो' कहैत छथि - 'नै हजूर ! हम ककरो नै कहने छिऐ । प्रहरीके कहने होइ त

गाइके मासु खाई । हमर बेटाके सप्पत । पता लगा लू हमरा जे सजाए देब, सहब हजूर । हमर बेटीके कुछोनै होए ।!

लगैछैक ओम्हरसँ खण्डहरमे प्रहरी गेलापर डटै छलै अपहरणकारी । मास्टर थर-थराइत सप्पत पर सप्पत खा रहल छलाह । जखन फोन बन्न भेलै तँ खुरसी परसँ उठि अखड़े चौकीपर चितङ्गे पड़ि रहल । लगैक जेना कतेक पैध बोझ माथपर पड़ि गेल हो । पत्नी चिन्तित, हतोत्साहित पति लग अबैत छैक । पुछै छै, - 'की भेलै ? कैला एना भऽ गेल छल ?'

'केओ गोटे प्रहरीमे खबर कऽ देने छलै कहांदन । ताहीपर विगड़ैत छल । के अछि हमर दुश्मन जे एना कएलक । विपत्ति अबैछै त एहिना छाया सेहो साथ छोड़ि दैत छैक' - मास्टर साहेब निढ़ाल भेल जोर-जोरसँ साँस लैत बरबराइत छलाह ।

पत्नी टौकैत छनि - 'आब की करबै । सात दिनमे पाइ कत्तसं लएबै ?'

'की करबै । ताबत दम धरबै । कोनो जोगाड़ लागि जाय से लगैए नै । मीतके कोना कहियौ । हजार-पांचसयके बात नै छै । दश-दश लाख । एतेक पाई की कोठी चक्कापर रहैत छैक जे हाथ धरु आ निकालि लू । ओहुना हुनकर हमरा सभपर बड़ उपकार छनि' -मास्टर साहेब हारल स्वरमे बजैत छथि ।

'त ई घर बेचि दिऔ । आ पाइ चुकता कऽ हमसभ दोसर ठाम चलि जाएब । समांग रहत त कमा खटा कऽ गुजर करब । बेटीके जान त बांचत' - सरितामे मायक ममता जोड़ मारैत छैक । 'लगैछै आब दोसर आशो नै अछि । 'लेकिन कहले समयपर लेबो के करत'- मास्टर साहेब पत्नीक हँ मे हँ मिलबैत बजैत छथि ।

'आब त उगलहे सुरुजपर भरोसा कर' पड़तै' -सरिता निराश स्वरें हाथ उठबैत आंगन दिश विदा भऽ गेलीह । मास्टर साहेब टुकुर-टुकुर आकाशकेँ निहारैत रहलाह ।

● ●

८

आइ फेर कएदिनसँ किरणकेँ कओलेजमे देखि नहि रहल छैक राजीव । जहिया नहि देखैछ मोन छटपटा उठैत छैक । शुरुमे जहिया नहि भेटवाक बात कहने छलीह तँ राजीबक होश गुम्म भऽ गेल रहै । कएदिन धरि ओहो कओलेज नहि आएल छल । एम्हर जहियासँ ओ आब लागलि छलि ओ नियमित अबैत रहल अछि। दुनू गोटे पूर्वक निर्णयपर अटल रहबाक बेर-बेर सप्पत खाएल करैक । अपन-अपन माय-बापकेँ मनएबाक जिम्मेवारियो लऽ लेने रहए ।

मुदा फेर कैक दिनसँ ओ लापता अछि। फोन करैछै तँ फोन नै जाइछै । स्वीच अफ बतबैत छैक । फेर किछु भेलै की ? ओकर आंगन जाउ त कोना। दू माइल चलिकऽककरो घरमे जुआन बेटीकेँ खोज जएबाक किछु अर्थ होइछ। परिवार वा समाज की बुझतै । की करओ-राजीवकेँ किछु अनहोनीक शंका बुझएलै ।

तखने विनोद आन तीन गोट संगीक संग ओत्त आएल । खाली बेंचपर एसगर उदास राजीबकेँ देखलकै त फट् द बाजि देलक-'लगैछौ ओहि पहड़नियांक वियोगमे पडल छें ।'

राजीब गुम्हरि कऽ विनोद दिश तकैत अछि आ कड़कि कऽ बजैत अछि - 'विनोद, तोरा बाज' के लूरि नहि छौक । की पहड़नियां -पहड़नियां लगौने रहैत छे । की ओ सभ मनुक्ख नहि छै ? की ओकर नाम नहि छै ?'

'माफ कर भाई ! हम वास्तवमे मजाकमे कहि देलियौ ! तों त जनैत छें किरणके हम भौजी कहैत छिऐ आ मजाकमे पहड़नियां सेहो । एक्कोरत्ती दुख नै मानैत अछि । वरु बिहुंसि कऽ चुप भऽ जाइत अछि ।'

'ई तोरा दुनूक बात भऽ सकैछौ । हमर बात भिन्न अछि । तों जनै छही हमरा लेल किरणक की महत्व छैक । एकदिन नहि देखैत छी अथवा एकबोल नै सुनैछी त मन विचलित भऽ जाइत अछि । से आई कएक दिनसं ओ देखाइ नहि पड़ैत अछि । आ ने मोबाइले उठबैत अछि । ताहूसं मन चिन्तित अछि ।'

सभ गोटे गंभीर भऽ जाइत अछि । वास्तवमे चिन्ताक विषय तँ छलैहे । ने कओलेजमे अएनाइ आने फ़ोने कएनाइ वा उठएनाइ । सभक अनुहार पर चिन्ता देखार भऽ जाइत छैक ।

पाँचो महक एकटा छोटे कदके विद्यार्थी विनोदकेँ कहैत छैक -'उत्तरवारी टोलक एकटा लड़की अपहरणमे पड़ल छैक । नेपालीके एकटा मास्टर छै। उ त पं. चन्द्रशेखर मिश्र हमरा ओत्त आएल छलाह, सत्यनारायणक पूजाक तीथि देख त बजैत छलाह त हम सुनलिऐ । हमरा लागल ई त आइ काल्हिके खेल भऽ गेल छै' के ध्यान देओ ।'

चौंकि उठल राजीब। ओइ साथीकेँ कनेक नीक जकां बात फरिछएबा लेल कहलकै । साथी बात फेरसँ पूर्वेकेँ दोहरा देलकै । राजीबकेँ लगलैक शायद किरणे भऽ सकैत अछि - 'नेपाली पढ़ब' बला मास्टर आ ओकर बेटी । ओना ओइ टोलपर दोसरो नेपाली पढब बला छैक । मुदा किरणकेँ किछु दिनसँ कओलेजमे नै अएनाई, फोन सम्पर्क नै भेनाइ कतौ ने कतौ सत्य जकाँ लगैत छैक ।'

राजीब एहि सत्यकेँ जानबाक लेल कछमछा उठल । ओ विनोदकेँ संग लऽ मोटरसाइकलसँ उत्तरबारी टोलदिश विदा भऽ जाइत अछि ।

● ●

५

उत्तरबारी टोलमे पैसबाकाल दक्षिणे दिशसँ एकटा चौक छैक । ओत्त रामलछन कामत एकटा चाहक दोकान खोलने अछि । ओइ परोपट्टाकें बुझल लोक भोर-सांझ ओकरा ओत्त चाह पीबाक लेल करमान लागल रहैत छैक । सयसं उपर गिलासकछल्ली, दू गोट नोकर आ दर्जनसँ उपर लोक लगभग दिन भरि । केबल कलौक बेरमे गाहक पतरा जाइत छैक ।

बात रामलछनकें चाह दोकानपर सेहो चल लागल छैक । लोक डरे गर जांतिएकें बजैत अछि । पता नै काल्हि ओकरोपर चढ़ाइ कऽ दैक । जकर कोनो इमान आ प्रतिष्ठा नहि होइछ ओ किछु कऽ सकैत अछि । सुखीमड़र हल्लुक स्वरैं लछुमन बेलदारकें कहैत छैक - 'अन्हेर भऽ गेलै । मास्टर साहेबके पढुआ बेटीके स्कूलस निकलिते कहांदुन गड़ीमे धऽकऽ किछु लोक उठा लेलकै आ आब दश कि बीस लाख मंगै है । हौ, कत्तसं देतै मास्टर !'

लछुमन बजैत अछि -'हं, हौ हमहूं सुनलिऐअ ।' आ चारुकात चकुआकऽ धीरेसँ कानमे कहैत छैक -'कहांदन ओइ गाड़ीमे लुखिया लठैत रहै हौ ।'

'हौ मरदे, उ त कामेश्वर बाबूके दहिना हाथ है । केना रहतै हो ।' 'एह, इहो बातके सभ तरि गुपचुप चर्चा होब लागल है ।'

'हे, भऽ गेलै । चलऽ ई बात सभ एना चौक चौराहापर बाजबला नै है । हम सभ गरीब आदमी छी । कैला झमेलामे पड़ब !' - सुखी मड़र हाथक खैनीक जूमकें चुटकीमैं लछुमनकें दैत उठि जाइत अछि ।

मुदा ओकर बात ठीक पाछाँमे बैसल चाहकचुस्की लैत राजीब आ विनोद सेहो सुनैत अछि । ओकरा दुनूकें जाइते राजीब, कामतकें चाहक पाइ दैत छैक आ मोटरसाइकल पर विनोदकें बैसबाक ईशारा करैत अपना टोलदिश बढ़ि जाइत अछि ।

बाटमे विनोदकें छोड़ैत घर पहुंचिते राजीब मायकें सोर करैत अछि -'माय, गे माय, जल्दी एम्हर आ त !'

राजीवक माय आंगनसँ बाहर अबैत अछि आ बेटा दिश उत्सुकतासँ देखैत पुछैत छैक - 'की भेलै बौआ ! एना किए वेकल छे ?'

'बेकल, हएबाक वाते छै माय । कह पहिने बावू कत्त छौ ?'

'तोरा बुझले हौ । उ अपना मनके मनमौजी छथि । हएता कतौ समाजसेवा करैत ।'

'मोबाइलसं फोन लगा त !'

'कएने छलिऐ, नै जा रहल है ! कहै छै स्वीच अफ है । एकटा ठेकान रहे तखन ने ककरो खोजहु पठौतिऐ । मनराके घरमे वीआह छै, पाइला भोरेसं तंगरने है । ताहीला हम फोन कएने छलिऐ' ।

मायक उत्तर सुनि राजीब गुनधुनमे पड़ि जाइत अछि । ओकर कछमछी देखि माय पुछैत छैक - 'बौआ, कोनो खास बात है की ! वापके जरुरी हौ ?'

'बात त खासे है माय । उत्तरवारी टोलके मास्टर साहेबके तों जनिते छीही - रमेश माटसैब ।'

'हं, हुनका के नै जनैत छनि । बड़ नीक लोक छथि । तोरो त उएह पढ़ौने छथुन्ह ।'

'आ इहो जनैत होइबही उत्तरबारी टोलपर एकटा लड़कीके अपहरण भऽ गेल छै ?'

'हल्ला त है ।'

'हल्ला मात्र नै सांच बात छै माय ।'

' वाप रे अन्हेर भऽ गेलै । लोक कहै मधेश आन्दोलनमे अपहरण, लुट आ चन्दा आतंक रहै । आब त सभ शांत भऽ गेलै । चुनावो भऽ गेलै । फेर ई कोन व्यक्ति सभ छै जे एना कऽ रहल है, जानि नै ।'

'ई के कऽ रहल है से त बुझल नै है ककरो मुदा इहो बूझि ले जे अपहरणमे पड़लि ओ लड़की और केओ नै किरण छै ?'

'अएं रे किरण बौआ छै रे ! माने रमेश मास्टर साहेबके बेटी । हम त दोसर कोनो मास्टर बुझने रहिहै । तों त ओकरा बारेमे कहने रहे आ हम त भेंटो कराबकेलेल कहने रहियौ । बौआ, ई त अनर्थ भऽ गेलै । तोहर बाबूके कहि कऽ चण्डलबा सभके हथकडी लगब' पड़तै !'

राजीवक माय आगाँक चौरमे राखल खुरसीपर बैसि जाइत अछि । चेहरा क्लांत भऽ जाइत छैक । जेना मोनमे रहल कोनो सपना छहोछित भऽ गेल होइक ।

'हथकड़ी ककरा-ककरा लगैबही। ई हथकड़ी तोरो घरतक आबि सकैछौ।'

'ई की बजैछे राजीव। के अछि एत्त एहन ?'

'बाबूजी ! हं, हुनके शागीर्द सभ ई अपराध कएलक अछि आ हमर दुनियां उजारि कऽ राखि देलक। हम एक्को आदमीके जीब नै देबै, चाहे हमरा जे होइक' - राजीव आवेगसँ दुरुखीसँ आंगनमे पैस चाहैत अछि। ओकर अभिष्ट बूझि माय हाथ पकड़ि दोसर खुरसीपर बैसा लैत छैक।

'ई केहन बात तों बाजि देलही बौआ ! तोहर वापक साथी सभ एहन त नै है। एकसं एक बढ़का आदमीसं संगत है तोरा वापके। चौगम्मामे लोक इज्जत करै है। मधेश आन्दोलनमे राशन, पानी उहे पहुंचबैत छलै, अपनो लागल रहै। ई तों की कहि देलही ?'

'माय तो भोली छें। जीवनभरि जाहि व्यक्तिक संग रहले तकरा चीन्हि नहि सकलही। ओकर एक्केरुप तोरा अगां अएलहु। एकटा जवावदेह पतिक, घरवाला आ पति परमेश्वरक रुप। दोसर समाजक आगां अएलैक समाजसेवी, आन्दोलनी आ परोपकारीक। मुदा तेसर रूप सेहो भऽ सकैछ - हत्या, अपहरण आ फिरौती कऽकऽ धन जम्मा कर' बला पिशाचक। ई ने तों देखि सकलही, ने तोहर बाल बच्चा देखलकौ आ ने समाज देखलकै। तएँ ओ रूप नुकायल रहलै। आ तों, समाज ओकरा इज्जत दैत रहलै, प्रतिष्ठा दैत रहलै !'

राजीवक भाषणसँ मर्माहत ओकर माय कनेक जोरेसँ राजीवपर पिता उठैत छैक -'वस, आब एक्को शब्द नहि। तोरा पर ओइ छौड़ीके भूत सवार छौ। ओकरा आंगा तो अपन जन्मदाता धरिकें उकटि देलही। आइ ओ सुनतौ त की होतै घरमे बुझल हौ ?'

'की होतै, हमरा घरसं निकालि देतै। हमरा आने जकां पेस्तोल निकालि शूटकऽ देतै, आर की करतै ?'

राजीवक मायकेँ उड़ीवीड़ी लागि जाइत छैक। कछमछी बढ़ल जा रहल छैक। राजीव एक्के बेर एतेक आक्रामक भऽ जएतै, ओकरा विश्वासे ने छलै। किए भऽ गेल ओ एना !

पुछैत छै - 'तों एतेक भारी आरोप कोना लगैलही ? अनकर सुनल प ने !'

'हं, सुनल त अनके अछि। मुदा किरणक अपहरणमे लुखिया लठैतके गामबला साफ देखलकै। खाली वावूके डरे पुलिसके किछु नै कहै छै। तोंहू जनै छीही, लुखिया बावूजीके दहिना हाथ है। बेर-सबेर ओकरा लेल हबेली खुजल रहै छै।'

'हं ई त सांच बात छै लुखिया हुनकर बेसी प्रिय पात्र छनि। मुदा ओ एहन नीच काज करत। ई कोना भऽ सकैछै ?'

'इएह भेलैए मां, इएह भेलैए। तोरा लगैछौ जे हम तोरासं झूठ कहबौ ? चल बाबूजीके लग। हुनकेसं पुछै छी, वात की छै, तखन तोरा विश्वास होतौ ने !'

'नै, एखन तों शांत भऽ जो। किरणके अपहरणके हमरो बड़ दुख भेल अछि। जकरा अपना घरमे पुतहु बना कऽ लाब' के मन बना लेने छली, तकरा संग ई दुर्व्यवहारसं हमरा ठेस पहुंचल अछि आ तोरो पहुंचल छौ से ठीके। मुदा कनिक नरम भऽ कऽ सोचही। बौआ, एहि आरोपमे कतेक दम भऽ सकैछै ? यदि गलत भेलै त बढका अनर्थ भ जएतै।'

'माय, एखनो तक तोहर स्वामीभक्ति सांचके स्वीकार नहि कर' चाहैत छौ। तैस त कहै छियौ चल। बाबूजी अवश्य गेस्ट हाउस बला घरमे हेथुन।'

'नै, आइ धरि घरके कोनो महिला ओत्त गेलैए से हम जाउ। ओत्त हुनक पाहुन सभ अबैत रहैत छथि, ई ठीक बात नै होएतै।'

'एखन नीक आ बेजाय विचारके समय नहि छैक माय। पानि माथसं उपर बहि रहल छैक। जा धरि बातके तह धरि नहि पहुंचल जएतै, किछुओ भऽ सकैछ। आब मात्र किरणक बात नै छै, हमरो जीवनक बात अछि। तोरा केहन लगतौ जे हम सभके छोड़ि, किरणके खोजमे बौआइत कतौ चलि जाइ।'

'नै, चल हम चलै छियौ। जखन घरे उजड़ि रहल अछि तखन इज्ज्त आ मान मर्यादाक कोन गप्प। सत्य धरि पहुंचब जरुरी छैक। हम अपने तोरा वापसं पुछबै, आखिर की छै एहि घटनाके पछाक रहस्य।'

राजीव कनेक आश्वस्त होइत अछि। मायकेँ मोटर साइकलक पाछाँ बैसबैत छैक आ पुरना घराड़ीदिश विदा भऽ जाइत अछि।

● ●

६

पहिलुका घरवारी रहल पुरना घड़ारीपर चारि कोठलीक सुन्दर मकान बनौने छथि कामेश्वर सिंह। लोकसभसँ एत्तहि भेंटघाँट होइत छैक। नइ-मेहमान अएलापर एत्तहि टिकबैत छथि। एकरा बोलीचालीमे 'गेस्टहाउस' कहल जाए लागल छैक।

अइ घराड़ीपरक 'गेस्टहाउस'मे किछु एहनो लोकक आगमन होइत रहैत छैक जे गामक लेल अनचिन्हार भेल करैत अछि। चेहरा-मोहरा किछु भय प्रदान कर बला। एहन लोकसँ चुपचाप भीतरका कोठरीमे भेटल करैत अछि कामेश्वर सिंह, ओतए जएबाक अनुमति घरक लोको धरिकेँ नहि छैक। वाहर दरवान रहैत छैक जे ओहि घरकेँ सुरक्षाक लेल राखल सन बुझाइत छैक, मुदा ओ आब जाए बलाक हैसियत देखि मालिककेँ खबरि कऽ भेट करबैत छैक।

एखने एकटा जीप ओहि मकानक पछुआरमे आबि कऽ ठहरैत छैक। जीपमेसँ लुखिया आ तीन गोटे आर उतरैत अछि। ओकरा देखिते दरवान भीतर पैसैत अछि आ चोट्टे बहरा कऽ लुखियाकेँ भीतर जएबाक संकेत करैत अछि।

भीतरमे एकटा पैध कलात्मक खुरसी पर कामेश्वर सिंह बैसल छथि। आगाँक टेबुलपर किछु फाइल सभ राखल छैक। दूटा मोबाइल सेट सेहो घएल छैक। वगलमे एकटा स्टीलक अनवारी छैक। जे बन्द अछि आ कोनमे एकटा गोदरेजक सेफ छैक। नीचाँमे कारपेट विछाओल, जाहिपर टेबुलकेँ आगा नीक आ मोट जाजिम पसरल अछि। खुरसीकेँ दुनूकात सोफा सेट छैक, जे प्रायः विशिष्ट मुलाकातीक हेतु उपयोगमे लाओल जाइत हएतैक।

लुखिया तीनूकेँ संगलेने कोठरीमे प्रवेश करैत अछि। कामेश्वरकेँ सलाम करैत छैक, तकरासंगे ओ तीनू सेहो झूकि कऽ सलाम करैछ। कामेश्वर तीनूकेँ कनेक गौरसँ देखैत छथि आ लुखियाकेँ पुछैत छथि -'काम भऽ गेलै ?'

'जी मालिक, पांच पेटी मात्रे देलकै। कतबो धमकएलकै, मारलकै तैयो नै आगां बढ़लै' - लुखिया हाथमहक छोटका बेग कामेश्वरक आगाँक सेन्टर टेबुलपर धऽदैत छैक।

'हूँ'-कामेश्वर हुंकारी भरैत वेग खोलैत अछि आ ओहिमेसँ तीनटा गड्डी निकालि कऽ तीनू दिश फेकैत कहैत अछि -'ले, तोहूँ सभ मौज कर।'

फेर लुखिया दिश ताकि पुछैत छैक -'उत्तरवारी टोलक की हाल छै ?'

'मालिक, ऊ त देबसं नासकार कऽ रहल छैक। गरीब मास्टरके संगमे दशलाख कत्तस अएतै से कहि रहल छै ?'

'कहिया तक समय देने छही तों सब ?'

'एह, आइ अन्तिम दिन छै। सुनलिऐअ कहांदन घर बेचि रहल है। भऽ सकैए बेटीक कारणें पाइ दऽ दै।'

'से खिआल रखिहे। कहने छियौ, तहिना करिहे। बांकेक जंगलमे लऽ जो। मास्टरके ओतै सांझमे बजा कऽ पाई लिहे आ बेटी दीहे। हं, एकटा बात ध्यान रहे। पाइ नै देतौ त ओकर बेटीके ओत्तस लऽ जा कऽ जंगलमे उड़ा दिहे, बस।'

'जी, एहिना होतै। त हम अखनु जाइ छी। वंठा सभ बैसल होतै।'

'ठीक छै जो। कनी सावधानीसं, ककरो भनक नहि लगै। एहन कामसभ जोखिम बला होइछै। पुलिसो सुंघैत रहैत छैक। आ हे, ओम्हर दरबज्जा दिश एखनु नै जइहे। राजीव आ ओकर माय एखनु देखतौ त शंका करतौ। गांवमे हल्ला पसरल छै कहांदन।' - लुखियाकेँ चेतबैत

कामेश्वर वेग लऽ कऽ उठैत अछि आ सेफकेँ खोलि कऽपाइ निकालि तहिया कऽ धर' लगैत अछि ।

लुखियाकेँ निकलिते ओही दरबज्जा दऽकऽ राजीव आ ओकर माय बटेसरबाली प्रवेश करैत छैक । वाहरमे ठाढ़ दरबान मलकिनी आ छोटका मालिककेँ देखि भौचक्क रहि गेल रहय । ने रोकैत बनलै ने भीतर कहैत बनलै । लुखिया सेहो दुनूकेँ भीतर पैसैत देखि लेने रहय । ओ तीनूक संग गाड़ीमे बैसल आ लंक लागि गेल ।

पाइकेँ सेफमे धऽ सेफ बन्द करैत काल कामेश्वरकेँ बुझएलै जे केओ दरबज्जापर आबि गेल अछि । ओ भय आ क्रोधसँ चिचिआइत घुमैए -'रे विसुनमा...।' बात पुरा करैत कि सोझाँमे पत्नी आ एकमात्र बेटा राजीवकेँ रोष आ घृणासँ अपना दिश तकैत देखैत अछि ।

कामेश्वरकेँ तिजोरी लगाबहुकेँ सुधि हेरा गेलै । भरल तिजोरीमे हजारी नोट सभ ओहिना थकिआएल देखा रहल छलैक ।

कामेश्वर पत्नीकेँ किछु कड़किए कऽ पुछैत छैक -'अहां एत्त किए अएलहुं? आइ धरि ...।'

'हं, हम आइ धरि एत्त नहि आएल छलहुं । अथवा कही अहां एहन बनौने छलहुं जे घरक स्त्रीगण एहि मकान धरि नहि आबथि । आ जखन अएलहुं त अहांक ई रुप देखलहुँ ।'-बातकेँ कटैत बटेसरबाली बजैत अछि ।

'अएँ, की देखलहुं' -तिजोरीदिश देखि - 'ई पाई त अही सभक हेतु तहिया कऽ रखने छी ने । ई शान शौकत एहिना नै ने छै ।'

'दूर जो, बढनीमारु एहन शान-शौकतकेँ जे दोसरके लूटि कऽ, मारि कऽ जोड़लजाए ।'

कामेश्वर तँ सकदम्म भऽ जाइत अछि । पत्नीदिश गौरसँ तकैत छथि । ठाढ़े-ठाढ़ ओ बेटादिश सेहो तकैत अछि जे ओकरा दिशसँ मुहफेरने दोसरदिश ताकि रहल अछि ।

फेर बजैत अछि - 'अहां ई की बजलहुं राजीवक माय । हम लुटिकऽ लौने छी ई रकम सभ ?'

'हं, अहां अपहरण, हत्या कऽकऽ पाइ जोड़ने छी । लुत्ती लागो अहांकेँ एहन पाइमे जे सभ किछु नष्ट कऽ कऽ राखि देलक अछि ।

'हम एखनो नै समझलौं । अहां कह की चाहै छी ?'

'त सुनू, हम ई कह चाहैत छी जे अहां जे लुखियाके अरहबै छलिऐ से सभ बात हम सभ सुनि चुकल छी । बौआ हमरा घरपर कहलक त हमर सोझिआ मन नै मानैत रहै । आ जखन एत्त अएलहुं त ई रुपरंग देखि कऽ अवाक् छी । आइ धरि जाहि मरद संगे हम जीवन वितौलहुं ओ एहन पापी, अपराधी निकलत हमरा पता नै छल ...।'- वटेसरवाली धौना कर' लगैत छथि ।

राजीव आब मुंह खोलैत अछि -'चल माय । आब त पतिअएले किने तो, लोक ओहिना नै गामभरि बाज' लागल छै । मधेश आन्दोलनक ओटमे एहनो अपराधी सभ जन्म लेने अछि जे सम्पूर्ण समाजकेँ अपन क्षुद्र स्वार्थक खातिर बन्धकी बना देने छैक, ओकरासं दाम असूलैत छैक । छीः एहन व्यक्तिके बापो कहब आब हमरा लेल मृत्युक समान हएत । चल, कानूनी कार्यवाही करबै । किरणके अपहरण इएह जरुर करौनै हएतै ।'

माय-बेटाक सम्वादसँ एकाएक थकित भऽ गेल कामेश्वर सोफापर पड़ि रहल छल से किरणक नामपर चौंकि उठैत छैक ।

'कोन किरण ?'

'उएह किरण, जकरा संग राजीवक विवाहक बात हम अहांके कहने छलहुं । आ अहां आन्दोलन शांत भऽ जएतैक त सोचबाक बात कएने रही । ओइ बेचारीपर की वितैत हएतै से के जनैत अछि । लोक लुखियाके नाम कहैछै, उएह उठौने छै ओकरा । कहू ई कुकर्म किए कैलिऐ ? की अहांके लगैए,किरणके विना अहांक बेटा एक्को क्षण जीअत ? ककरा लेल ई धन, सम्पति आ शान शौकत ?'

'चुप माय ! एहन दुष्कर्मी व्यक्तिक बेटा कहि कऽ किए समस्त समाजक भलाआदमी श्रमजीवी वापक अपमान करैत छीही । हम त कहलियौ ने, चल । आब जे हएतै, पुलिसे स्टेशनमे हएतै ।'

कामेश्वरक आँखिमे सेहो नोर भरि अबैत छनि, माथ झूकि गेलनि। ओ आलमारी खोललनि आ ओहिमेसँ पेस्तौल बहार कएलनि। बटेसरवाली राजीवकेँ पकड़ि कऽ अपना लग सटा लैछ। ओकरा मुंहपर भयक रेखा दौगि जाइत छैक। पता नै पेस्तोल ओ ककरा पर चला देत।

कामेश्वर पेस्तोल हाथमे पकड़ि ट्रेगरपर आँगुर कसि पत्नी आ बेटा दुनूसँ कहैत छैक -'ठीक छै। हम अपराध कएने छी। किरणक अपहरणो हमरे कहलापर भेल छैक। अनजानमे हमरासं जे भूल आ पाप भेल अछि तकर दण्ड तोरा सभके नहि, हम अपने दैत छी।' आ कानमे पेस्तोल सटा फायर कर' चाहैत अछि कि पत्नी राजीवकेँ छोड़ि दौड़ि कऽ कामेश्वरक हाथ पकड़ि कऽ घीचि लैत छैक।

'ई की कऽ रहल छी। जे अपराध अहां कएलहुं अछि, तकर दण्ड मृत्यु नहि, प्रायश्चित छैक। अहां प्रायश्चित करबाक संकल्प लिअ। सभ ठीक भऽ जएतै।'

राजीव सेहो किछु हतप्रभ तँ भेल छल, मुदा घृणा एतेक बढ़ि गेल छलै जे एहि घटनासँ ओ ततेक विचलित नहि भेल अछि।

'हम की करु ! केना कऽ आइ समाजमे जी सकब ? जकरा अपन घरक पुतहु बनैबाक तैयारी करैत छलहुं तकरे अपहरण करा देलिऐ। हे भगवान ! बटेसरबाली हम की करु, अहीं कहु !'

'हम कहलहुंने ! प्रायश्चित करु ! आइसं ई धंधा छोड़ि कऽ सुच्चा मधेशी बनि अपन अधिकारक लेल अपनाके समर्पित कऽ दू। किरण बेटीके तत्काल मंगाउ, छोड़ि दिऔ। मास्टर साहेबसं माफी मांगि कऽ बेटीक हाथ मांगि लियौ अपना बेटाक लेल। बस...। की राजीव ?'

राजीव किछु बजैत नहि अछि। मायकेँ बुझल छै जेना ओकर बाप ओकरा माया करैत छैक, राजीवो ताहिसँ कम नहि। एकटा बेटा, जे कहै, तुरत हाजिर। अपना सोझाँसँ बाहर पढ़' नहि पठौलकै। एक मात्र सन्तान, कोरामे खेलत, आगाँमे रहत। राजीबो मानि जएतै से मायकेँ विश्वास छलै।

'ठीक छै, हम तुरंत खबर करैछी। कत्त छै ओ सभ। किरणके लऽ कऽ तत्काल मास्टर साहेब लग लओतैक। अहां सभ घर जाउ।'

कामेश्वर मोटर साइकल निकालैत अछि आ दक्षिण मुहे कतौ अज्ञात स्थलदिश बढ़ि जाइत अछि।

* * *

बेलेरो जीपकेँ भीतर आंखिपर पट्टी आ दुनू हाथकेँ रसीसँ बान्हल किरण निर्मिमेष भावे दुनू वलंठ मुस्तंडाकेँ उपस्थिति अनुभव करैत रहैत अछि। गाडी-वेगसँ भागल जारहल छैक। रस्ता किछु उभर खाभर छै, जाहिसँ ग्रामीण वाट हएतै - किरण अनुमान लगबैत छै। समय की हयतै पता नहि। दुनू किछु बजितो ने अछि। तावत एक गोटेक मोबाइलक घंटी बजैत छैक।

'जी'-मोबाइल उठब वला आदरसँ बजैत अछि। पता नै मोबाइल कर' बला की कहै छै ओ अपन साथीसँ हरबड़ा कऽ कहैत - 'भाइ जल्दी गाड़ी घुमा। बौस कहै छै जीरोमाइल आब' ला। चल जल्दी।' गाड़ी घुमैत अछि। जेम्हरेसँ आएल रहैछ - तेम्हरे चलि पड़ैछ। किरण अनुमानो ने लगा पवैत अछि आखिर की भैलै जे गाड़ी उनटे घूमि गेलै। मुदा ई धरि जरुर बुझैत रहए, ओकरा उड़एबाक स्थान पविर्तन कएल जा रहल छैक। कनेक बेसी सुरक्षित स्थान।

● ●

७

शहरक कातमे एकटा अढ़ाइ मंजिलक मकान छैक । अगिला सिसाक केबिनमे कम्प्यूटर सभ राखल छैक । उपर बोर्ड लिखल छै - राजीव इम्पेक्स । एत्त माल-सामान सप्लाईक काज होइत छैक । कैकटा कर्मचारी छैक । सड़क कातक मुह व्यापारक हेतु । भीतरका कोठरी-गोदामक हेतु आ उपरका कोठरी सभ दोसर अफिसक लेल ।

एहि मकानक दूटा प्रवेश द्वार छै । सडक कातक जनता जनार्दनकेँ लेल । पछबारी कात खास-खास व्यक्तिक लेल । गेस्टहाउसे जकाँ कामेश्वर सिंह एत्तहु व्यवस्था कएने छथि । एहि ठाम ओ भलादमीक रुपमे कहियो ने अबैत छथि । जतेक अपहरण होइत छैक एही ठामक गोदाममे राखल जाइत छैक । मकानकेँ भीतर गेलापर पहिल तल्लापर एकटा पैध कोठरी छैक, जाहिमे गेस्टहाउस जकाँ सोफा सभ धएल मुदा नीक, गदगर । टेलिफोन सेट राखल । नीचाँ कालीन ओछाओल । जत्त ओ शहरिया मालक डील करैत छथि । किछु एहनो व्यवसायमे ओ संलग्न छथि जे समाजद्वारा मान्यता प्राप्त नहि अछि । ओइ गोदाम, कार्यालय आ मालक रक्षाक लेल हथियार बन्द युवक सभ चौबिस घंटा पहरा दैत छैक, मुदा सभ कामदार आ दोकानदारक रुपमे ।

कामेश्वर सिंहक मोटर साइकल पछिला दरबज्जासँ भीतर प्रवेश करैत अछि । ओकरा तीन-तीनटा मोटर-जीप छै, मुदा ओ मोटर साइकलमात्र चढैत अछि । एकर कारण की छै केओ जानि नहि पौलक अछि आइ धरि । गेटपर चौकिदार सैलूट करैत छैक जकर कोनो उत्तर विना देनहि ओ सरसराइत मकानक अंगनईमे जा मोटर साइकल रोकैत अछि । सभ सुरक्षा कर्मचारी सतर्क भऽ जाइछ । ई विना सूचना आ

असमयमे मालिककेँ अएबाक कोनो अर्थ त हयतै जरुर । सभक चेहरापर दहशत पसरि गेल छैक । कैक बेर मन खराब होइत छैक तँ ओधबाध कऽ पीटि दैत छैक । कोहराम मचा दैत छैक । तखन समाजसेवी नहि, चण्डाल लागए लगैत छैक कामेश्वर सिंह ।

कामेश्वर सिंह सरसराएल अपन कोठरीमे जा आँखि मुनि कऽ सोफापर ओंगठि जाइत छैक । सभकेँ बूझबामे आबि गेलै, आइ फेर किछु हएतै । पता नै ककरा पर ठनका खसतै । ककरो भितर जा चाह-पानिक लेल पुछबाक हिम्मत नै होइछै । सभ दरबज्जाक वाहर थाहाथही देने आदेशक प्रतीक्षा कऽ रहल छल ।

कनेक काल एहने अवस्था रहलै । तखने पछिम भरसँ जीपकेँ अबैत देखलक सभ । कनेक लग अएलै त चिन्हलक - ई त अपने जीप छलै बलेरो । कैला घुमलै ! एकरा त बांके जंगलमे जाएकेँ छलै । कोनो लफड़ा भेलै की ! एही लाने त माकिककेँ ठोढ़ पर फुफड़ी पड़ल छै । कतेको बात ओतुक्का लोक सोचैत रहल ।

जीप ओहिना सरासर आंगनमे आबि रुकलै । बाहरक बढ़का दरबज्जा बन्द कऽ देल गेलै । जीपसँ किरणकेँ उतारि वंठा अपना संगक युवक सभक संग उपर एकटा दोसर कमरामे लऽ गेलै । किरणकेँ भीतर राखि केवार बन्द कएलक आ कामेश्वरबला कोठरीमे आबि ठाढ़ भऽ गेलै । ओ अपनासंगक पांचो युवककेँ कोठरीक बाहरे ठाढ़ रहबाक संकेत कऽ चुकल छल ।

'अएले ?' - कामेश्वर अनमनाएले सन पुछैछै ।

'जी मालिक । आदेश पबिते घुमि गेल छली । की फिरौती आबि गेलै ?'

बंठाक ई पूछब ओकरा लेल अपशकुन भऽ गेलै । कामेश्वर जेवीसं पेस्तौल निकालि वंठापर तानि देलकै -'सार, तोंही सभ दिनराति एकरा उठाउ, ओकरा पकडू, एतेक पाई मांगु, ई करू ऊ करू कहैत-कहैत हमरा सनका देने छे । आ आइ तोरे सभके वातमे लागि कऽ एकटा बढ़का अनर्थ कऽ बैसल छी । कह, शूट कऽ दिऔ ?'

वंठाक त बोलिए बन्न भऽ गेलै। ई तँ सभ दिनकेँ धंधा है। माल मिललापर छोड़ब। फेर नयां मुल्लाकेँ खोज करब। मधेश आन्दोलनक बाद त ई दैनिक काज जकाँ भऽ गेल छै। कहियो मालिक एना नै पिताई छलाह। आइ किएक।

बंठा मनेमन बहुत बात सोचि लैत अछि। इहो सोचि लैत छैक जँ किछु बाजब तँ अनर्थो भऽ सकैछै। देखी मालिक की कहै छथि।

'तों सभ जकरा जंगलमे काट' लऽ जा रहल छलीह जनै छही के छै ?'

'मास्टर साहेबके बेटी।' - वंठा साहस कऽ बजैत अछि। ओकरा इहो बुझल छै मालिककेँ बातकेँ उत्तर नै दौक त तैयो ओकरापर बिसा सकैछै।

'सार, ओइ मास्टरके बेटीके नाम जनै छीही ?'

'जी नै, तकर जरुरते नै पडलै। उठौलिऐ आ एक दिन चुरेमे आ फेर एहि ठाम बन्न कऽ देलिऐ।'

'पता नै लगबक चाही। के अछि, ककर सन्तान अछि। पाइ दऽ सकैए कि नहि।'

'माइवाप, हम सभ त पहाड़ी देखिते नाम गाम कुछ नै पुछै छिऐ, की इएह कम भेलै जे ओ पहाड़ी हई।'

'बस एही ठाम हम मात खा गेली रे सार। ई त मास्टर रमेश उपाध्यायके बेटी किरण छै, जकरा हमर बेटा राजीव प्रेम करै छैक आ जकरासं विआहक लेल ओकर माय हमर मंजुरी लऽ लेने रहै। कह त कतेक अनर्थ भऽ गेलै। आब हम कोन मुंहस ओकरा आगां जएबै ?'

बंठा तँ चुप्प। लगैछै जेना ठीके जुलुम भऽ गेलै। वाहरमे दहशतसँ एक पतानी भऽ ठाढ़ पाँचो युवककेँ ई वात सभ सूनि होशे गुम्म भऽ गेलै। 'पता नै आब की होतै।' तखने हहाइत-फुहाइत लुखिया लठैत प्रवेश करैत छैक अंगनइमे। छौरा सभकेँ किछु आश जगलै। सभकेँ मेट उएह छैक। सभकेँ हवाई उड़ैत देखि ओ ईशारासँ पुछैत छैक - 'की भेलौ ?' सभ ईशारेसँ भीतर मालिक विगड़ि रहल हएबाक बात बतबैत

छैक। आब लुखिया दोमांधमे पड़ि जाइत अछि - भीतर जाओ कि जहिना आएल छल चुपेचाप बहरिया दरबज्जासँ निकलि जाओ। फेर सोचलक बाहर जएबे करत त कतेक कालक हेतु। फेर त आबहि पड़तै। ओ हिम्मत कऽ भीतर प्रवेश करैत अछि आ हाथ जोड़ि कऽ सलाम करैत अछि।

'या, अएलौ सार। एकरे बहकएने सभ अनर्थ भऽ गेल छै।'

'जी' - लुखिया किछु नहि बूझि बात आगाँ बाजए चाहलक।

'तोंही ने उठैने रही किरणके -मास्टरके बेटीके। ओ त हमर पुतहु होब बला रहै रे सार। सभ वर्वाद कऽ देले तों।'

'मालिक, हमरा त किछु ने मालूम है। इहे छौड़ा सभ ओटिऔलकै। हमसंग देलिऐ आ लऽ अनलिऐ। के छै, कहां छै किछु बूझल नहि रहे।'

लुखियाक बात सुनि कऽ कामेश्वर एक क्षण मौन भऽ जाइछ। पेस्तोलकेँ हाथमेसँ जेबीमे धऽ लैत अछि। लुखियाकेँ कहैत छैक -'जो बजा सभके।'

लुखिया बाहर जाइत अछि आ पांचोकेँ बजा अनैत अछि। सभ अर्ध गोलाकारमे कामेश्वरक सोझां ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

'देख, जे भेलै से भेलै। जे तों कएले ताहिमे हमरो हाथ रहए तएँ मात्र तोंही सभ दोषी नै। दोषी हमहुं छी। ई घटना हमरापर बढ़का बोझ बनि गेल अछि। हम आब एहु दुआरे एहि सभसं अलग होब' चाहैत छी जे हमर पत्नी आ एकमात्र सन्तान राजीव सेहो सभ जानि लेलक अछि। हमर घरमे बवंडर उठि गेल छैक। आब हम कनेको देरी करब त सब कुछ बर्बाद भ जायत। आ अपन घरके बर्बाद होइत नहि देखि सकैछी।'

लुखिया साहस करैत अछि -'मालिक, तब हमरा सबके लेल की हुकुम है ?'

'जखन हमही छोड़ चाहैत छी त तोंहुसभ ई सब छोड़ि दे। अपन-अपन रोजगार कर। घरपरिवार बसा आ समाजमे प्रतिठासं बैस।'

सभ गंभीर भऽ जाइत अछि। ककरो किछु बोल नै फुराइत छैक। तैयो साहस कऽ युवक महक एकटा बजैत अछि - 'हम सभ त बड़ अपराध

कऽ लेने छी। ने पुलिस छोड़तै ने समाज। तखन अपन घर केना बसएबै ?'

'वात त तोहर उचित छौ। एकटा उपाय छै। हम प्रशासनसं बात करैछी आ तोरा सबके हथियार सहित आत्मसमर्पण करा दैत छियौ। राज्यसं सुरक्षा भेटि जएतौ आ असल नागरिक सेहो बनि जएबे।'

मालिककेँ बात सभकेँ नीक लगैत छैक। जखन मुहड़े उछटि गेलै त असवारीकेँ कोन भरोस। सभ एकस्वरसँ जवाव दैत छैक - 'ठीक छै मालिक जेना अहाँ नीक करिऐक। हम सभ तैयार छी।'

कामेश्वर उठैत अछि आ कोठरीमे एक टहलान मारैत अछि। जेना किछु सोचि रहल होइक। फेर किछु फुराइत छैक आ वंठाकेँ कहैत छैक -'बचियाके अत्यन्त आदरके साथ खाय पीबला दही। हम एखन जाइछी। जत्त कहबौ लाबला तत्त अदबस लऽकऽ आबि जइहे।'

'ठीक छै मालिक' - बंठा बजैत अछि। आब सभमे फूर्ति आबि गेल रहैत छैक। एक त जान बचबाक आ दोसर मालिककेँ रुप परिवर्तनक।

कामेश्वर मोटर साइलकपर चहरि फेर शहर दिश बढि जाइत अछि। एम्हर सभ अपना-अपनीकेँ किरणकेँ खुएबा लेल सामानक ओरिआओन कर' लगैत अछि।



८

कामेश्वर जखन रमेश उपाध्यायक घरमे पहुंचैत अछि तखन ओ अवाक् रहि जाइत छथि। घरमे ताला लागल रहैछ। तखने राजीबो पहुचि गेलैक। पड़ोसियासँ ज्ञात होइछै ओ सभ भोरे कतहु चलि गेल अछि। आब ? राजीव तँ फेर छटपटा उठैत अछि। ओकरा तँ की करु की नहि किछु नहि फुराइछ। कामेश्वर बेटाक पीड़ा बुझैत छैक। ओकरा मोन पड़ैत छैक जगमोहनजी। ओ त उपाध्यायजीक लंगोटिया मीत छथि। हुनका त जरुर पता हएतनि। वेटाकेँ पाछाँ अएबाक ईशारा करैछ आ जगमोहनक ओत्त चलि पड़ैत छथि।

जगमोहन दरबज्जापर चौकीपर चित्ते पड़ल छलाह। घरवाली बगलमे बैसल किछु बुझा रहल छथिन्ह। दूटा नेना टुकुर-टुकुर अपन वाप-मायक उदास-उदास अनुहारकेँ अपलक देखैत जा रहल अछि।

जगमोहन रहि-रहिकऽ छाती पीट लगैछ - 'हमर मीत हमरासं दूर चलि गेल। ई रछसवा सभ मनुक्खके मनुक्ख रह नै देब चाहैछै। कोना कऽ रहबै हम मीत बेगैर।'

जगमोहनक कनियां विसुनपुरवाली ठाढ़स बन्हवैत कहैत छथिन्ह - 'आब जे होएबाक छलै से भऽ गेलै। जुआन वेटीके केओ उठाकऽ लऽ जाइ आ औकातसं बेसी पाइ मंगै त केओ की करतै ? धनो गेलै आ इज्जतो ! कोन मुहलऽकऽ रहौक !'

जगमोहन हाकरोस करैत अछि-'हम ई जनिती त मीतके छोडि क कतौ नै जइती। हमरा जाइते की स की भ गेलै। हम अपनाके कहियो माफ नै क सकबै।'

तावत कामेश्वर अबैत अछि। घरवाली ओत्तसँ उठि कऽ आंगन चल जाइत अछि। कामेश्वर बाइकसँ उतरि जगमोहन लग आबि चौकी पर बैसैत अछि। पाछाँ पाछाँ राजीब सेहो अछि। जगमोहनक हालति देखि कामेश्वर सिंह अवाक् भऽ जाइछ। तैयो हिम्मत कऽ पुछैत अछि - 'भाइ जगमोहन, ई की हाल बनौने छी ?'

'नै, पुछु कामेश्वर भाइ ! अहां त देश-दुनियां देखने छी। बुझै-गमै छिऐ। केओ पाइके खातिर एना कऽ ककरो घर उजाड़ि सकैहै। मधेशके मुक्ति ! देशके मुक्ति करबेरमे कहां एनाकऽ अपने आदमी सभकें मारै-पीटै आ अपहरण करै। एकटा गरीब मास्टर जकर पुश्तैनी बास एत्त रहै ओ आइ भगा देल गेल अछि। ओकर बेटी लापता छै', जानसं उपर पाइमंगै छै बेटीके छोड़बा लेल ! ई कोन आन्दोलन छै ? पापी, अपराधी सभ बुझौ जे ई ओकर वेटी-पुतहुक संगे भेल रहितैक त की होइतैक ?'

कामेश्वर अवाक् भेल कखनो बेटाक उत्तेजित अनुहार दिश त कखनो जगमोहन दिश देखैत अछि जे बजैत-बजैत जोशमे आबि उठि कऽ बैसि गेल अछि। ब्यबहार एहनसन जे जँ अपरधी भेटितैक त काँचे चिबा जइतै।

राजीव साहस कऽ बजैत अछि - 'काका, मास्टर साहेब कत्त चल गेलाह ? घरमे त ताला लागल छै ?'

जगमोहन- 'उएह त कहलियौ बौआ ! अपन वेटीक दुख सहि नहि सकल। तैपरसं रोज पाइके लेल धमकी। हमरासं चोरा कऽ काल्हि अपन घर बेचि लेलक आ आई सेहो हमरा विना कहने काठमाण्डूके बस पकड़ बस स्टैण्ड चलि गेल अछि। हम कतबो, अपना ओइठाम रहके लेल मनैलिऐ, नै मानलक। अपन वेटी इजोतियाके अवाइके बातो कैलिऐ तैयो नै मानलकै। कामेश्वरभाइ, जत्त आदमी इनसानियत छोडि देने हो ओत्त बैसलो कैला जाए। आज एहि माहौलमे हमहुं सभ कोना रहब ? ई राज्य लेत ककरा लेल, जनते नै त राज कथीले ?'

कामेश्वर घड़ी देखैत अछि -साढ़े पाँचमे खुज बला बस एखन छओ बजै छैक। माने आधा घंटा भेलै बस खुजि गेलै। मोटर साइकिलोसँ पाएब कठिन, तखन ?

राजीव दिश तकैत अछि। ओकर मुहपर भावदेखि ओकरा किछु कहबाक साहस नहि होइछ। मोबाइलपर कोनो नम्बर दबबैत छैक। ओम्हर ककरो मुजेलिया आ महेन्द्रनगर बीचमे गेल बसकें रोकबाक आदेश दैत छैक। जगमोहन आश्चर्यसँ ई सब देखैत रहि जाइत अछि। कामेश्वर ईशारा करैछ आ कहैत अछि - जगमोहन जी, जल्दी अपन मोटर साइकल निकालु। चलू हमरा संग, उपाध्यायकें घुरा कऽ लाबक अछि।

जगमोहन आ राजीव दुनूके बुझबामे किछु नै अबैछ। तैयो मीतकें घुरबाक आशमे कामेश्वरक वातकें मानैत जगमोहन मोटर साइकल निकालैत अछि। राजीव सेहो बापक पाछाँ पाछाँ चलैत अछि आ मुजेलिया दिश जाइत सडकपर उड़ि जाइत अछि।



९

रामानन्द चौकक बस स्टैण्ड । दूनू बेटा बेटी प्रतिभा, १० वर्षक आ विनोद ६ वर्षकसंग दुनूपरानी बसमे बैसि चुकल अछि रमेश उपाध्याय । आंखिमे बेर-बेर डबडबा अबैत नोरकेँ गरदनिमे लेपटायल गमछासँ पोछैत अछि । पत्नीक हाल सेहो बेहाल छैक । ओ पलटि-पलटि कऽ पाछाँ, चारु कात तकैत रहैत छैक । माने लगैत हो केओ ओकर वेटीकेँ लेने ओकरा लग आबि रहल हो । ओना ओकरा बूझल छैक ओकर बेटीकेँ वांके जंगलमे रखने अछि चंडलबासभ । वेटी किरणकेँ आइए पास केलाक बाद कम्प्यूटर इंजिनियर बनएबाक लौल रहै । आब नहि जानि कोन चंडलबाक चंगुलमे अछि ।

मास्टर साहेब पत्नीक दर्द बुझैत छथिन्ह । दुनू बच्चाकेँ कोरामे लऽ भोकासी पारि कान' लगैछ । बसमे बैसल लोक अकचका जाइत अछि । किछु चिन्हल लोक टोकि दैत छैक -'की भेल मास्टर साहेब ।'मास्टेर साहेब आंखिक नोर पोछैत चुपचाप अपन सीटपर बैसि जाइत अछि । पत्नी हाथसँ मास्टर साहेबक हाथकेँ थपथपा दैत छथि ।

बस खुजबाक समय भऽ गेलै । ठीक पांच तीसमे खूजि जाइछ । पत्नी फेर एक बेर चकुआइत छथि । आ निराश भऽ पतिक मुरझाएल अनुहारक संग तालमेल कर लगैछ । मुश्किलसँ आधाघंटा भेल हयतै आ कुम्हरौरासँ आगां निकलल हयतैक कि किछु मोटर साइकर पर सबार युवक सभ बसक आगाँ मोटर साइकल लगा दैत छैक । बस कड़कड़ाइत ब्रेककसंग रुकैत अछि । मास्टर साहेबक आँखिमे भय दौड़ि जाइछ । पाइ नहि देबाक कारणेँ कतौ उएह अपहरणकारी त बस नै रोकलक । पत्नी त आर थर-थर

कांप'लगैत छथिन । वसमे चढ़ल आनो लोक डरेँ घामे तरबतर भऽ गेल । ई साँझे केहन डकैती भेलै ?

दू गोट युवक बसके भीतर ढुकैत अछि । यात्री सभ पर नजरि दौगबैत छैक । पुछैत छैक- 'एहिमे मास्टर उपाध्यायजीके छथि ?'

लिअ, आब त सोरहो आना हमरे सभके जानपर बनि गेल - मास्टर साहेब डरे थर-थर कँपैत उतारा दैत अछि - 'हमहीं छी !'

दुनू युवक अत्यन्त भद्र व्यवहारक संग मास्टर साहेब लग अबैत अछि आ आग्रह करैत अछि - 'अपने सभ उतरियौ, कामेश्वर बाबू भेंटऽ आबि रहल छथि ।'

मास्टर साहेबकेँ विश्वास नहि होइ छनि । जरुर ई सब कामेश्वर बाबूक नामपर उतारि लेत आ जेहो किछु बांचल अछि सभ किछु लुटि लेत । मारियो सकैत अछि । ओ उठ नै चाहैत छथि । पत्नीक अनुहार सेहो स्याह भऽ गेल छनि । बच्चा सभ डरे मुहमलीन कऽ वाप-मायक अनुहार देखि रहल अछि ।

युवक - 'अहां कनेको चिन्ता नै करु, ओ अपनेक वेटीके लऽकऽ आबि रहल छथि ।'

उपाध्याय दुनू परानी फेर चौंकि उठैत अछि- कामेश्वर बाबू आ हमर बेटी । नै जरुर किछु लफरा छै । हमरा सचेत हएबाक चाही ।

'अहां कथीक गुनधुनमे पडि गेलहुं मास्टरसाहेब । हमरासभपर विश्वास करु,झूठ नै कहै छी ।'

मास्टर साहेबकेँ लगै छनि भरोसा नहि करबाक आब कोनो उपाय नै छै । ओहुना त बर्वादे अछि, एहुना सही । ओ दुनू बच्चाकेँ डोरिअबैत अपन बेग हाथमे उठौने बससँ उतरि जाइत छथि । डिक्कीमे धएल सामान उतारबाक एखन जरुरति नहि बूझैत छथि । पता नहि कखन की भ जाए ।

बसक यात्री सभ अबूझ जकाँ एक दोसराक मुह देखैत रहैछ । बसकेँ एखनो किछु युवक रोकने छैक । वातावरणमे दहशत पसरि गेल छैक । यात्रीसभ सोचैत अछि आखिर पुलिसो किए ने अबैछै । जान त बांचैत ।

दुनू युवक उपाध्यायजीक हाथसँ सामान सभ अपना हाथमे लऽ लैछ आ बससँ उतरैत अछि। नीचाँक खाली जगहमे सामान सभ राखि युवक मोबाइलमे ककरोसँ वतिआइत अछि। फेर मास्टर साहेब लग आबि बजैत अछि - 'बस, आबि गेलाह। अहां सभ निश्चित रहु।'

ताबत तीनटा मोटर साइकल रुकैत छैक। मास्टर साहेब झोलफोलमे देखैत अछि - एकटासँ कामेश्वर बाबू ,दोसरसँ राजीवकें उतरैत आ तेसरसँ मीतकें। आब किछु भरोस होइत छनि - बात किछु छैक जरुर !

कामेश्वर लगमे आबि मास्टर साहेबकें पयर पकड़ि लैछ -'मास्टर साहेब हमरा नै बुझल छल जे किरण अहांक बेटी अछि। धोखामे एकटा पैध गलती हमर आदमी कऽ लेने अछि। अहां जे दंड देब चाहै छी दऽ सकैछी।'

जगमोहन सेहो अकबक भऽ जाइछ। किरनक अपहरण कामेश्वर बाबूक आदमी कएलक ! एतेक पैध समाजसेवी आ एहन व्यवहार !

मास्टर साहेब तँ उपरे लटकि जाइछ। कखनो मीत कें तँ कखनो अपन पत्नीकें देखैत अछि। राजीव मुड़ी गोंतने ठाढ़ अछि।

'हम एखनो किछु नै बूझि सकलहुं कामेश्वर बाबू' -मास्टर रमेश उपाध्याय आश्चर्यसँ पूछैत छथिन।

'मधेश आन्दोलनक कममे पाइ उगाहीक धन्धा खूब जोरसं चललै। शूरुमे ई एकटा मिशन छल, बादमे किछु गोटेके कमाइक जरिया भ गेलै। एहने धुरफन्दमे पड़ि हमरो आदमी एहि कुकर्ममे लागि गेल आ आइ किरण ओकर शिकार भैलैए। हम अपराधी छी ,जे सजाय देबाक हो हम तैयार छी।'

मास्टर साहेब नीचाँमे धएल बेगपर धम्मसँ बैसि जाइत छथि। हुनका नै फुरा रहल छनि जे की कहओ। तैयो मोनमे उठि रहल झंझाबातकें दबबैत कहैत छथि- 'कामेश्वर बाबू, हमरा बूझल अछि मधेश स्वायत्त प्रदेश बनबाक चाही। प्रयास जारी अछि, रहबाको चाही। मुदा तकरा लेल पहाड़ी-मधेशी वीचके दुरी बढ़ा कऽ नै एकजूट भऽकऽ बढ पड़त। अहांक आदमी भ्रममे छथि। एहन काज कएलास की परिवर्तन हएत। अहांसभकें ई बात सिखएबाक चाहिऐक।'

कनेक काल गुम्म भ- 'हमर बेटी कोन हालतिमे हएत -अहीं कहु ई उचित भेलै ?'

'नहि-किन्नहु नहि' - कामेश्वर एखनो पयर पकड़ने अछि- 'तएँ ने क्षमा मंगैत छी। हमरा माफ करु !'

'एत्त माफक बात नै छै। बात हमर प्रतिष्ठाक, हमर बेटीक इज्जतक अछि। केना ओ समाजक आगां आबि सकत।'

'मास्टर सदैब तं क्षमाशील होइत अछि, जरुर अहांके माफ करताह। मुदा ई कुकर्म जे आन्दोलनक नामपर भेलैए आ भ रहल छै तकर समाधान की' -वकौर लागल जगमोहन कुहरैत अछि।।

'ठीक छै, आनके बात नै कहब,हमरसभ केओ सरकारक आगां आत्मसमर्पण करत। शांतिपूर्ण आन्दोलनसं परिवर्तन लओतैक सभ, ई संकल्प लेलक अछि' - कामेश्वर वाजल।

'तखन देरीए सही अपन घर धूरि अएलहुं, हम दण्ड देबबला के,क्षमा करथिन्ह ईश्वर। बेटी कत्त अछि। हमरा बेटी चाही आ बसोके देरी होइछै। चल जएबै।'

राजीबक माय सेहो ताबत एकटा दोसर मोटरसाइकलपर जूमि जाइत छैक।

कामेश्वर मास्टर साहेबकें आश्वस्त करैत कहैत छथि - 'अहां निश्चिन्त रहु, अहांक वेटी सुरक्षित अछि, कनेके कालमे आबि जाएत।'

तावत मोटर साइकलपर पाछाँ बैसल किरण अबैत अछि। मायके देखिते मोटर साइकलपरसँ उतरि दौड़ि कऽ गलामे गला मिला भोकासी पाड़ि कान'लगैछ। वापक आंखिमे सेहो नोर भरि जाइछ। वेटी-मायक कन्नारोहटिसँ माहौल गम्भीर भऽ जाइछ। राजीव कनेक हटि कऽ ठाढ़ भऽ जाइछ। कामेश्वर मास्टरकें देखैत चुपे अछि।

किछु शांति भेलाक बाद मास्टर साहेब सभसँ हाथ जोड़ैत विदा मगैत छथि - 'माफ कएल जाओ, आब बेटियो आबि गेल अछि। हमरा सभके जाए देल जाओ। वसके यात्री सभ कुलबुलाइत हएतै।'

'आब कत्त जएबै अहां। जे भेलै से भेलै। रे वंठा, जो बसकें जाए दही। डिकीसँ हिनकर समान ल आन। मास्टर साहेब आब एत्तहि रहताह' -कामेश्वर जोड़ दैत कहैत अछि।

मास्टर साहेबक स्वर भरिआ गेल छनि - 'नै, कामेश्वर बाबू ! हमर वेटी धूरि आएल अछि। एकर भागमे जे होतै-होतै। कमा-खटाकऽ कोनो झोपड़ियोमे गुजर कऽ लेबै हम सभ। जत्त प्रतिष्ठा आ इज्जत दांवपर लागि गेल हो ओत्तस कोन मोह। आब एहि ठाम रहब सम्भव नहि!' आ फेर भोकासी पाडि कान लगैछ मास्टर साहेब।

जगमोहन आगां बढि मीतकेँ पजिया लैछ आ चुप करैत अनुनय करैछ -'मीत हमर बात त अहां पूर्बो नै मानलहुं। अन्तिम बेर कहैछी,नै जाउ। हमसभ किरण बेटीके लेल करबै जे कर पड़तै।

'अपन मीतोके बातके कोनो मोजर नै देबै' -कामेश्वर तीर फेकैत छैक।

मास्टर साहेब आगाँ बढ़ि मीतकेँ छातीसँ लगा लैत अछि - 'मीत, हम अहांके बात एखनो नहि मानि सकब। घरोपर नै मानलहुं, एतहु नहि मानि सकब। हमरा खातिर अहां सभ कैला परेशान हएब। जखन हमर दाना-पानी एत्तसं उठिइ गेल त रहि कऽ की हएत।'

'आब अहां ओना कोना जएबै मास्टर साहेब ! जं अहांक वेटी अपहरणमे पड़ल नै रहैत त हमर आदमी सभ मनुक्खं नहि बनैत, हम ओकरेमे ओझराएल अपराध पर अपराध करैत जइतहु। जं ई बन्दी भेलीह, सभ सुधरल अछि। जं ई नहि धूरि अओतीह त हमर वेटा सेहो एहि दुनियांमे नहि रहि पबैत। तखन हमर ई शान, शौकत कत्त चल जाइत, हम कत्त रहितों !'

'हम बुझलहुं नहि ! -अवाक भेल मास्टर साहेब कामेश्वरक मुह देख लगैछ।

'बात हमहूं नहि बुझने रहिऐ, आ जखन बुझलिऐ त हमर दुनिये दोसर भऽ गेल। राजीवकें सोर पाड़ैत -राजीव एम्हर आ !'

राजीवक नाम सुनिते किरण मायक गला छोड़ि चिहुंकि उठैत अछि। राजीवकँ लग अबैत देखि आर जोड़सं कान' लगैछ।

मास्टर साहेब राजीवकेँ आ अपन बेटीकेँ देखैत अछि। ओकर माय बुझैत छैक दुनूक बात तएँ बेटीकेँ चुप करैत किछु कहैत छैक।

कामेश्वर बजैत अछि- 'अहां कहने छलहु मास्टर साहेब, एहि घटनास. अहां आ अहांक बेटी समाजमे मुहदेखएबाक जोगर नै रहलहु।'

'एहिमे अपनेके कोनो शक बुझाइत अछि' -मास्टर साहेबक मुह फेर करुआ जाइत छैक।

कामेश्वर सिंह समधानि क बजैत अछि -'आ जं अहांक बेटीके हम अपन पुतहु बनाली त !'

मास्टर साहेबकेँ जेना अपन कान पर विश्वासे नहि होइछ। ओ एकबेर फेर अकबका गेल आ टुकुर टुकुर कामेश्वरकेँ मुहे देख लगैछ।

कामेश्वर फरिछबैत अछि - 'मास्टर साहेब ! अहांक बेटी आ हमर बेटा दुनू एक दोसरासं अगाध प्रेम करैत अछि। एखनो राजीव वेहाल भऽ हमरा वात कहिनी कहने छल, तखन हम बुझलिऐ। तएँ, कहल अछि आब अहां कत्तहु ने जएबै। जाहि धरतीक ईंच-ईंच अहांक पुर्खासं सिचिंत छैक, मेहनतक घाम आ इमानक लहूसं सरावोर छैक ओहिपर हमरा सभसं कम अधिकार अहांके नहि अछि। आब अहां जएबै नहि !'

मास्टर साहेब बेटी दिश गहिंरइसँ तकैत छथि। किरण अपन आँखि तर कऽ लैत अछि। फेर मास्टर साहेब पत्निदिश देखैत छथि। ओहो माथ डोला दैत छैक।

मास्टर साहेब निसांस छोड़ैत बजैत छथि -'तखन, आब की हो ?'

कामेश्वरजी कहैत छथि -'किरणक विआह राजीवसं होइ से आशीर्वाद अहां दियौक, बस !'

'हमर अवस्था एहन त नै अछि। दोसर हम सभ पहड़िया समाजक लोक, अहांके कठिनाइ हएत' -मास्टर साहेबक बोलमे पीड़ा घोरायल छलनि।

वर्षहुसँ एहि धरतीपर एकठाम-एकसंग रहैत दुनू समाज कोनो खास वर्गकें लक्षित क़ऽ होइत आन्दोलनक शिकार नहि हयबाक चाहैत छलै। ई आन्दोलन त ओइ खस सभक विरुद्ध छैक जे मधेशपर आधिपत्य कर चाहैत अछि। सोचमे गलत प्रवृति बढने बाट सेहो गलत पकडा गेल छलै। आब सभकें ई बात बुझ पड़तै। आ मास्टर साहेब, एहि समझके आगां बढएबाक लेल अहांक स्वीकृति एहि नव अध्यायक प्रारंभ हयत'-कामेश्वर सिंहक स्वरमे पाश्चातापक गन्ध ओहिना महशूस कएल जा सकैत छल।

'मीत, कामेश्वर बाबू ठीके कहै छथि। हम सभ एहि समस्यासं लड़बै तखने एकर निदान हएतै' - जगमोहन समझाब' चाहैत अछि।

मास्टर साहेब गुम्म भऽ जाइत छथि। पत्नी दिश तकैत छथि। पत्नी बेटी दिश तकैत अछि। बेटी राजीव दिश। एक दोसराक भावके सभ पढ़ चाहैत अछि।

मास्टर साहेब बजैत अछि - 'ठीक छै, किरण आ राजीवक विवाहक हेतु हमरा सभक स्वीकृति अछि। मुदा हम सभ किछु बेचि कऽ जा रहल छी। एतेकटाक परिवार लऽ कत' रहब - कोना रहब ! तएं जखन ठौर भेटिजाएत त एत्तहि आबि विवाहक विधि विधान सम्पन्न करब।'

'ई कोना भ सकैछ। कत्त रहबाक कोन बात भेलै। मीतक ओत्त रहब, कत्त रहब। जा धरि विवाह नहि भऽ जाइत अछि, हम अपना ओत्त रहबा लेल कहियो ने सकैछी' - कामेश्वर उत्साहित अछि।

'नहि, हमरा ओत्त जगह नै छैक। मीत के जत्त मोन होइ छै रहि सकै छथि। हमरासं हुनका कोन मतलब। जाथु जहां जाएके छनि।' - जगमोहन दुखी मनसँ बजैत अछि।

'ई केहन मित्रता भेलै औ जगमोहन ? एहन अवस्थामे अहीं ने काज अएबनि' - कामेश्वर जगमोहनकँ टोकैत छथि।

'नै, मीतके दुख वाजिब छनि। ओ त अपना ओत रहबा लेल कहिते छलाह, हमही नै मानने रहिएनि' -मास्टर साहेबक बोलीमे ग्लानि छनि।

'समस्या पड़लापर अपना ओत्त रहबाक लेल जखन अनुरोध कएलियनि त माननलि नहि आ एकटा दलालक हाथे औनपौन दाममे घर बेचिकऽ भागल जा रहल छथि। ई नै भेलनि जे मित्रोके आब दैत छिऐक। एहन मित्रताके कोन मतलब ! चुपचाप भागबाक की अर्थ'!-जगमोहन ठीके रोषमे आबि गेल अछि।

'किरणक मायके जोड़पर हम चुपचाप जाइ छलौं। एकर जोड़ रहै मीतकें जखन ई बात पता चलतै त ओ किन्नहु नहि जाए देताह। तएँ' - मास्टर साहेब साहस बटोरि क बाजल।

'तखन जाउ, हम कहां रोक अएलहुं। ई त कामेश्वर बाबू छलाह जे किदन कहांदन कहि कऽ हमरा लऽ अएलथि। जाउ, जहां जाएके होइए'- आब रुसबाक पार जगमोहनक रहैक।

'बस त कखन ने चलि गेलै। आब कत्त जएताह। अहांके राखही पड़त' - कामेश्वर बाबू जगमोहनकें दवाव दैत कहैत छथिन्ह।

'तं लिअ, मीत रहताह आ जरुर रहताह मुदा हमरा ओत्त नहि' - जगमोहन दृढ़तापूर्वक बजैत अछि। सभ ओकर मुहदेख' लगैछ।

'हं, ठीके कहै छी। मीत रहताह आ अपन पुश्तैनी घरमे रहताह' - जगमोहन फेर जोड़ दऽकऽ बजैत अछि।

मास्टर साहेब अविश्वाससँ बाजि उठैत छथि - 'ई कोना संभव छैक ! हम त ओकरा बेचि लेने छी। पाइयो बूझि लेने छिऐ !'

'मुदा राजिष्ट्री नहि भेल अछि। जे दलाल किनलक से जानि बूझि कऽ रजिष्ट्रीके मीआद एकमास बढ़ौने अछि' -जगमोहन रहस्यकें उघारैत अछि।

'से त छै, ई अहांके कोना बूझल अछि ? हम त अहांस चोरा कऽ बेचने छलहुं' - मास्टर साहेब किछु संकोचसँ बजैत छथि।

'ओ एहि हुआरे जे ओ घर हमहीं किनने छी, अहींक लेल। हमरा बुझल छल, अहां जिदियाह लोक छी आ स्वाभिमानी सेहो। एखन दुखे जाइत छी, बादमे जं मोन मानि गेल आ आब चाहब त रहबाक लेल घर त चाही। अहां ने ककरो ओत्त रहब ने ककरो आगां हाथ पसारब। तएं गुपचुप ई नाटक कर पड़ल।'- जगमोहन बातकें फरछबैत जेबीसं घरक कुंजी निकालि मास्टर साहेबक हाथपर राखि दैछ। उपस्थित सभ केओ भौंचक्क रहि ज़ाइत अछि। मास्टर साहेबक आंखिमे फेरसँ दहोबहो नोर वह' लगैछ आ भरि पांज कऽ मीतकें पजिआ हिंचुक' लगैत छथि।

'मीत, क्षमा करब। हमरा जाहि तरहें दिनराति फोन कऽ धमकी देल गेल, टौर्चर कएल गेल, अन्तमे बेटीके उठा लेलक हमर मनः स्थिति बिगड़ि गेल छल। हम अपनाके एत्त पूर्णतः असुरक्षित मान' लागल छलहुं, तएँ अहूँस दूरी बढ़ि गेल। हम अनेरे अहांके दुखी नै कर चाहैत छलहुं। हमरा नै बूझल छल एहि धरतीमे अहां सन मीतके जन्म देबाक शक्ति छैक। एहि धरतीसं विस्थापित भ क सांचे हम बड पैघ गलती क रहल छलहुं। मीत, फेर एकबेर क्षमा मंगैछी। अपन जनमधरतीके चिन्हबामे हमरासं ठीके गलती भ गेल छल' - मास्टर साहेब आंखिमे नोर भरने भरिपांज क मीतके पजिऔने रहैछ। उपस्थित सभक आंखि भरिया गेलै।

कामेश्वर सिंह दुनू मीतक कान्हपर हाथ ध घुमबैत घोषणा करैछ - 'चलू अहां सभक मित्रता एकटा मिसाल बनि गेल अछि। जे गलत वाटपर जएबा लेल उताहुल युवा वर्गकें मनुक्ख बनबाक प्रेरणा देतैक। वस ! तखने राष्ट्रमहान बनत, मधेश महान बनत !'

सभक अनुहारपर एक बेर फेरसँ खुशी देखि पड़ैत छैक आ जखन मास्टर रमेश उपाध्याय सपरिवार घरदिश घुमैत अछि तँ माथपरक नवका जवावदेहीक बढ़का बोझ रहितो उमटाम लादल बैल गाड़ीक घरमुहाँ वयल जकाँ डेग फरहर आ जी हल्लुक बुझा रहल छलनि।



रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'



जन्म : २००८ साल, साओन, बधचौडा, जि. धनुषा
शिक्षा : एम.ए. (त्रि.वि.वि.) पीएच.डी. (मानद)
सम्प्रति : सदस्यः प्राज्ञ परिषद्, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान

प्रकाशित कृति

काव्य : बन्न कोठरी औनाइत धुआँ (कवितासंग्रह, २०२९), नहि, आब नहि (दीर्घकविता, २०३६), मोमक पधलैत अधर (गीत, गजल), अप्पन अनचिन्हार (कवितासंग्रह, १९९० ई.), भयो अब भयो (अनुवाद), बस अब नही (हिन्दी अनुवाद)।

कथासंग्रह : तोरासंगे जएबौ रे कुजवा (कथासङ्ग्रह) १९८४ ई., हुगली ऊपर बहैत गंगा (कथासङ्ग्रह) २०६५

उपन्यास : घरमुहाँ (उपन्यास) २०६८।

नाटक : रानी चन्द्रवती (२०४५), एकटा आओर वसन्त (२०५२), महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (२०५४), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरू (नेपाली अनुवाद, २०६४), भैया अएलै अपन सोराज (नाटकसंग्रह, २०६७)

शोध : जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू (२०५६), राजकमलक कथासाहित्यमे नारी (२०६४), लोकनाट्य : जट-जटिन (२०६४), **Cultural Heritage of Janakpur** (२०६२), मैथिली लोकसंस्कृति (आलेख संग्रह, २०६६), तराईको फांट देखि हिमालको कांख सम्म (आलेख संग्रह, प्रकाशकः साझा प्रकाशन,२०६७)।

विविध : आजको धनुषा (२०३९), जनकपुर लोकचित्र (२०४६), समयको अन्तराल पछ्याउँदै (आलेख संग्रह, २०६६), ठेकान पर (विचार संग्रह, २०६२), समय-सन्दर्भ (विविधात्मक, २०६८)

सम्पादन : मैथिली पद्यसङ्ग्रह (नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठान, २०५१), लाबाक धान (कवितासङ्ग्रह, २०५१), त्रिशूली (स्व. माथुरद्वारा लिखित खण्डकाव्य, २०४९), नेपालक मैथिली पत्रकारिता (२०४४), मैथिली लोकनृत्य : भावभंगिमा एवं स्वरूप (नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठान, २०६१), अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल (२०६५), हम और तुम (हिन्दी कवितासंग्रह, २०६६), मैथिली नाटक संग्रह (नाटक संग्रह, २०६७)

सम्मान : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानद्वारा प्रदत्त प्रथम 'मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार' द्वारा सम्मानित (२०५२), विद्यापति सेवा संस्थान, दरभङ्गाद्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान, शेखर प्रकाशन, पटनाद्वारा 'शेखर सम्मान', ने. मैथिली साहित्य परिषद्, जनकपुरद्वारा 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार', अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बईद्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान, मधुरिमा नेपालद्वारा 'मधुरिमा सम्मान', चेतना समिति, पटनाद्वारा यात्री चेतना पुरस्कार, साझा प्रकाशनद्वारा साझा लोक संस्कृति पुरस्कार (२०६८) आदि दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त।

विशेष : पूर्व अध्यक्ष : साझा प्रकाशन, ललितपुर

सम्पर्क : १५५५, सरस्वती सदन, जनकपुर, फो.नं. ०४१-५२०२६७, ९८५४०२०८८९
हाल : मैतीदेवी, काठमाण्डौ, फो.नं. ०१-४४४४९६८, मो. ९८४११६४७७०


ISBN 978-9937-2-4664-4
9 789937 246644